R. K. Advertising
के माध्यम से 'जैन गजट' में
विज्ञापन बुक कराने हेतु
सम्पर्क करें-
शेखर चन्द पाटनी
राष्ट्रीय संवाददाता-जैन गजट
मो. 9667168267
रोहित कुमार पाटनी, डायरेक्टर
(आर. के. एडवरटाइजिंग)
मो. 8003892803
ईमेल
rkpatni77@gmail.com

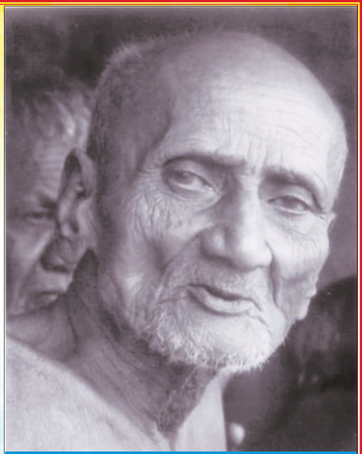

बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य
चारित्र चक्रवर्ती
परम पूज्य आचार्य श्री शांति सागर जी

नव वर्ष का नव प्रभात

पृष्ठ 06 पर...

1 दिसम्बर 1895 से प्रकाशित जैन समाज का सर्वाधिक प्रसार संख्या वाला साप्ताहिक

जैन गज़ट

www.Jaingazette.com

वर्ष 32 अंक 11 कुल पृष्ठ 12 लखनऊ, प्रकाशन तिथि- सोमवार 05 जनवरी 2026, वीर नि. संवत् 2552

Unit : Sri Bharatvarshiya Digamber Jain Mahasabha jaingazette2@gmail.com

विज्ञापन प्रेषक: R. K. Advertising मदनगंज किशनगढ़, द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatni777@gmail.com
हेड ऑफिस-मदनगंज किशनगढ़, ब्रांच आफिस- जयपुर, इंदौर, सूरत, मुम्बई, कोलकाता, गुवाहाटी

कक्षा चार की किताब में बच्चे पढ़ेंगे पद्मश्री संगीतकार रवींद्र जैन की प्रेरक कहानी

जीवन, संघर्ष और संगीत की दुनिया में योगदान एनसीईआरटी की किताब (संतूर) में

2014 में अंतिम बार आए अलीगढ़ - संगीतकार रवींद्र जैन का निधन वर्ष 2015 में हो गया। इससे कुछ समय पूर्व पद्मश्री सम्मान दिया गया। नवंबर 2014 में वे अंतिम बार अलीगढ़ आए। यहां संगीत अकादमी की स्थापना करना चाहते थे, अफसोस वह पूर्ण नहीं हो पाई। वह सात भाई-बहन थे। पिता इंद्रमणि जैन आयुर्वेदाचार्य थे।

अलीगढ़। प्रसिद्ध गीतकार व संगीतकार पद्मश्री रवींद्र जैन के जीवन की प्रेरणादायक कहानी परिषदीय स्कूलों में कक्षा चार अंग्रेजी की किताब 'संतूर' में पढ़ाई जाएगी। नए शिक्षा सत्र में यह पुस्तक बदलाव के साथ लागू होगी। कला, संस्कृति और इतिहास के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान देने वाली हस्तियों से परिचित कराने के लिए यह निर्णय एनसीईआरटी ने लिया। सूची में जन्मजात नेत्र दिव्यांगता को कुछ अलग करने की जिद के जुनून से हराने वाले रवींद्र जैन को शामिल किया गया। राम तेरी गंगा मैली हो गई पापियों के पाप धोते धोते और जोगी जी धीरे-धीरे जैसे कई गीत उनके आज भी लोगों की जुबां पर हैं। रामानंद सागर के टीवी सीरियल रामायण में भी इन्हीं का संगीत था। ''राम कहानी सुनो रे'', ''मैया तेने का ठानी मन में'', ''राम जी की सेना चली'' गीत खुद उन्होंने ही गाए थे। उनका जीवन और संघर्ष बच्चों के लिए एक प्रेरणा बनेगा।

अलीगढ़ के कनवरीगंज में 28 फरवरी, 1944 को जन्मे रवींद्र जैन के नेत्र दिव्यांग होने से स्वजन चिंतित रहते थे। मगर, रवींद्र जैन ने इसे कमजोरी नहीं बनने दिया। खुद को साबित करने के लिए बचपन से पसंद करते आ रहे गीत-संगीत की राह चुनी और साधना में जुट गए। इसके लिए कोलकाता गए, जहां संगीत का बेहतर माहौल मिला। 1969 में मुंबई पहुंचे और फिल्मी दुनिया में कदम रखा। फिर मुड़कर नहीं देखा। एक के बाद एक सफलताएं हासिल कीं। 'चोर मचाए शोर', 'गीत गाता चल', 'चितचोर', 'अंखियों के झरोखों से' 'नदिया के पार' सहित कई सुपरहिट फिल्मों के गीत व संगीत से पहचान बनाई। उनकी रचनाओं में खासकर भक्ति संगीत, हिंदी फिल्मों के गीत और लोक संगीत के तत्व देखने को मिलते हैं। उनकी आवाज में एक अद्वितीय मिठास और भावनाओं की गहरी समझ थी, जो उनके गीतों को अमर बना देती है। टीवी सीरियल महाभारत और कृष्णा में भी उनके गीत और संगीत था। उनके गीत -संगीत अब भी खूब सुने जाते हैं। उनकी यही सफलता की कहानी संतूर में होगी।

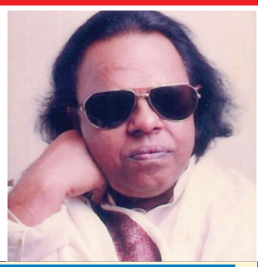

वात्सल्य मूर्ति, कवि हृदय राजकीय अतिथि, आचार्य श्री 108 शशांक सागर जी मुनिराज के चरणों में शत् शत् नमन् आचार्य श्री शशांक सागर जी महाराज एस.एफ.एस मानसरोवर आदिनाथ जैन मंदिर जिला जयपुर में विराजमान है।

आचार्य शशांक सागर वचन

जिनके चरणों में लगी हुई तीर्थों की पावन रजकण,
बड़े भाग्य से मिल पाता उन चरणों का स्पर्शन
जिनकी हितमित प्रिय वाणी हरती है धरती का क्रंदन,
ऐसे आचार्यश्री शशांक सागर जी के चरणों में हमारा शत् शत् वंदन

संसार से बचना हो तो बचा जीवन आत्मा में लगाओ

-: नमनकर्ता/पुण्यार्जक :-

श्रेष्ठी विनित चांदवाड़ (सिद्धार्थ नगर, जयपुर)
श्रेष्ठी ऋषभ कुमार सेठी (अध्यक्ष तिलक नगर जयपुर)
श्रीमती राखी गंगवाल, (आदिनाथ नगर, जयपुर)
अनिल कुमार पाण्ड्या (बनेठा वाले)
गजेन्द्र बड़जात्या, (कामा वाले) जयपुर

श्रेष्ठी महेश-राकेश कुमार ठोल्या (मारूजी का चौक, जयपुर)
पवन कुमार बड़जात्या मरवा वाले किशनगढ़
अशोक चांदवाड (वसुन्धरा कॉलोनी, जयपुर)
मधु जैन अध्यक्षा-श्री दिग. जैन मंदिर प्रतापनगर सेक्टर-3
कमल चंद छाबड़ा अध्यक्ष 1008 श्री शांतिनाथ दिग. जैन मंदिर मान्यवास, मानसरोवर, जयपुर

विज्ञापन प्रेषक: R.K.Advertising मदनगंज किशनगढ़ द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatin777@gmail.com

समाज से विनम्र निवेदन

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा द्वारा की जा रही धार्मिक एवं सामाजिक कल्याण की योजनाओं में दान देकर सहयोग प्रदान कीजिये। संस्था को 12 I/80G (प्रमाण पत्र संख्या URN-AAHTS7154EF2025101) एवं CSR-1 (प्रमाण पत्र संख्या -SRN-N30616809) के तहत आयकर में छूट प्राप्त है।

संपर्क : मोबाइल/वाट्सअप - 9415008344, 9415108233, 7607921391, 7505102419

SHRI BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN MAHASABHA

ACCOUNT NO. - 2405000100033312
RTGS/IFSC/NEFT Code - PUNB0185600 PUNJAB NATIONAL BANK, RAJENDRA NAGAR, Lucknow Pin Code - 226004 (U.P.)

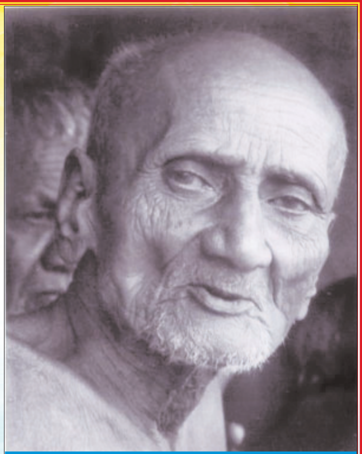

बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य
चारित्र चक्रवर्ती
परम पूज्य आचार्य श्री शांति सागर जी

हुक्का लाउंज पब संस्कृति पृष्ठ 06 पर...

1 दिसम्बर 1895 से प्रकाशित जैन समाज का सर्वाधिक प्रसार संख्या वाला साप्ताहिक

जैन गज़ट

www.Jaingazette.com

वर्ष 32 अंक 11 कुल पृष्ठ 12 लखनऊ, प्रकाशन तिथि- सोमवार 05 जनवरी 2026, वीर नि. संवत् 2552

Unit : Sri Bharatvarshiya Digamber Jain Mahasabha jaingazette2@gmail.com

आज बड़े बाबा के दर्शन कर मन गदगद हो गया: मुनिश्री प्रमाण सागरजी

मुनिश्री प्रमाण सागरजी ससंघ की कुण्डलपुर में हुई भव्य मंगल अगवानी

राजेश जैन रागी

कुण्डलपुर (दमोह), 31 दिसम्बर। युगश्रेष्ठ महासमाधि धारक संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज, विद्या शिरोमणि आचार्य श्री समयसागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य गुणायतन, विद्या प्रमाण गुरुकुलम प्रणेता, शंका समाधान, भावना योग, मंगल भावना प्रवर्तक परम पूज्य मुनि श्री प्रमाणसागर जी महाराज ससंघ की भव्य मंगल अगवानी कुण्डलपुर में हुई। प्रचारमंत्री जयकुमार जलज ने प्रेस विज्ञप्ति में बताया कि मुनिश्री संघ सहित कुण्डलपुर पहुंचते ही सीधे पर्वत चढ़ाई मार्ग से बड़े बाबा मंदिर पहुंचे, चढ़ाई मार्ग पर चलते हुए मुनि श्री ने अपने संघस्थ साधुओं को मार्ग के दोनों ओर लगे वृक्षों एवं पूरे पहाड़ी क्षेत्र पर लगे वृक्षों की श्रृंखला को दिखलाते हुए बताया कि यहां सदा हरियाली रहती है। यह पूज्य गुरुदेव की ही सोच का परिणाम है। मुनि श्री ने सीधे बड़े बाबा मंदिर जी जाकर पूज्य बड़े बाबा के ससंघ दर्शन किए और वहां से शंका समाधान के सत्र में सम्मिलित हुए। जहां पर मुनि श्री ने अपना मंगल आशीष देते हुए कहा कि आज बड़े बाबा के चरणों में आते हुए हमारा एवं सभी का मन बहुत उत्साहित था। आज बड़े बाबा के दर्शन कर मन गदगद हो गया। बड़े बाबा को अपने में समाए हुए गुरुदेव का दर्शन मुझे हुआ। यह क्षेत्र परम पूज्य गुरुदेव का ऋणी है, गुरुदेव ने सहस्त्रों वर्ष के लिए इस क्षेत्र को संरक्षित कर दिया। कितनी कठिनाइयां आई, कितना संघर्ष झेलना पड़ा, गुरुदेव के आशीर्वाद से और पूज्य बड़े बाबा के वरदान से सब कुछ ठीक-ठाक हो गया। पहले के कुंडलपुर और आज के कुंडलपुर में बहुत अंतर है। जब भगवान का गगन विहार हो रहा था, मैं यहां नहीं था कोलकाता में था पर मेरी आत्मा यहीं थी। सबके मन में डर था शंका कुशंकाएं थीं, लेकिन कमेटी तत्परता से लगी रही। इस धरा पर एक ही आत्मा निशंकित थी। वह निशंक होकर पूज्य बड़े बाबा का गगन विहार देखते रहे। इस वाकया को 20 साल हो जाएंगे। गुरुदेव कभी विचलित नहीं हुए उन्होंने सदैव कहा चिंता मत करो बड़े बाबा सब ठीक कर देंगे सब ठीक हो जाएगा। 2022 का महोत्सव भी बड़े बाबा की कृपा से अच्छी तरह होगा, गुरुदेव ने कहा - गुरुदेव तो दिव्य दृष्टा थे, बड़े बाबा का स्थानांतरण आवश्यक था। किसी ने भी इसको नहीं भांपा इसको एक ही शख्सियत गुरुदेव जिन्होंने यह निर्णय ले लिया। यहां जो कुछ भी हुआ है वह बड़े बाबा और छोटे बाबा का आंतरिक संवाद का फल है। उन्होंने कल्पवृक्ष सौंपा है। सभी को इसको सबसे खूबसूरत जगह बनाना है। भारत सरकार किसी भी अतिथि को लेकर आए तो ताजमहल बाद में पहले यहां लाने का विचार बनाएं। इसे ऐसा विकसित करना। भव्य विशाल मंदिर बनाया गया, यहां की भव्यता देखते बनती है। इतने में संतुष्ट होना पर्याप्त नहीं है। इसे भारत का सबसे सुंदर धर्म स्थल के रूप में प्रतिष्ठित करना चाहिए। आज मन बहुत गदगद है। मुनिश्री की अगवानी में प्रवेश द्वार पर कुंडलपुर क्षेत्र कमेटी ने पाद प्रक्षालन किया अगवानी में दिव्य घोष, अखाड़ा, विरागोदय महिला मंडल टीम, हटा से कलश लिए हुए महिला मंडल, अनेक महिला मंडल सहित वाद्य यंत्रों के साथ, पारंपरिक वेशभूषा में आकर्षण का केंद्र रहा , पाठशालाओं के बच्चे भी अगवानी में शामिल थे। बड़ी संख्या में देश के कोने-कोने से आए हुए श्रद्धालु भक्तगण अगवानी में चल रहे थे। पटेरा से लेकर बड़े बाबा मंदिर परिसर तक पूरे रास्ते में रंगोली की दिव्य छठा देखते ही बनती थी। यहां पर पूर्व में विराजित पूज्य मुनि अनुपम सागर जी, पूज्य मुनि संयम सागर जी एवं माता जी ने मुनि संघ की अगवानी की और पूर्णायु के सामने परिक्रमा लगाकर अभिवादन किया। नव वर्ष 2026 एक जनवरी को प्रातः पूज्य बड़े बाबा मंदिर परिसर में भावना योग सुबह 8:30 से 9:30 और पूज्य बड़े बाबा का अभिषेक, शांतिधारा, भक्तामर महामंडल विधान, पूजन विधान का कार्यक्रम के साथ नए वर्ष का शुभारंभ श्रद्धालु भक्तों ने किया। शंका समाधान का कार्यक्रम भी आयोजित हुआ। रात्रि में 8:00 बजे से सुप्रसिद्ध गायक नीलेश जैन म्यूजिकल ग्रुप बुढ़ार के कलाकारों द्वारा भव्य भक्ति संध्या के आयोजन में श्रद्धालु भक्तों ने भक्ति गीतों का भरपूर आनंद लिया और पूज्य बड़े बाबा की महाआरती की।

अति प्राचीन मनोरथ पूर्ण 1008 श्री मुनिसुव्रतनाथ अतिशय क्षेत्र, प्रभुसर हस्तेड़ा जयपुर

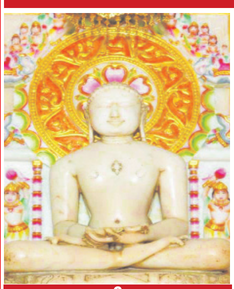

869 साल प्राचीन मूलनायक श्री मुनिसुव्रतनाथ प्रतिमा

शांतिधारा का प्रसारण

LIVE

आरती : 7:15 - 7:45 AM

शांतिधारा : 8:30 AM

@jainmandirhasteda

नामांकित शांतिधारा पुण्यार्जन के लिए संपर्क करें:

अमित शर्मा (Manager)-9783016885

नामांकित शांतिधारा के लिए किसी भी राशि का आग्रह नहीं है।

हस्तेड़ा जैन मंदिर
दूरी-दिल्ली से 250 किमी.एवं जयपुर से 65 किमी.

संपर्क सूत्र:
नितिन कुमार पाटनी (मंत्री) 9001255955
मनीष जी गंगवाल (कोषाध्यक्ष) 095880-20330

Buy online on jkcart.com

– Breakfast Matlab –

JK POHA

Shudh Khao Swasth Raho...

आचार्यश्री शिष्य निर्यापक मुनिश्री संभवसागरजी सानिध्य में हुआ आयोजन

यह मेरे जीवन का बहुत बड़ा सौभाग्य है, मुझे स्वर्णप्राशन पिलाने का सौभाग्य मिला: शिवराज सिंह चौहान

पुनीत जैन

विदिशा में 16 संस्कारों से युक्त आयुर्वेद का प्रसिद्ध संस्कार ''स्वर्ण प्राशन'' जिसमें आचार्य गुरुदेव श्री विद्यासागर जी महामुनिराज का आशीर्वाद भी मिला हुआ है, उसकी शुरुआत भारत सरकार के कृषी मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने विदिशा में विराजमान निर्यापक मुनि श्री संभवसागर महाराज, मुनि, श्री निस्सीम सागर महाराज, मुनि श्री संस्कार सागर महाराज के परम सानिध्य में उनके आशीर्वाद के साथ का कार्यक्रम की शुरुआत बरो बाले बड़े बाबा एवं छोटे बाबा आचार्य गुरुदेव श्री विद्यासागर जी महामुनिराज एवं आचार्य श्री समयसागर महाराज के चित्र अनावरण एवं दीप प्रज्वलन से की। समयाभाव सहित मुख्य अतिथि शिवराज सिंह चौहान ने सभी से विलम्ब के लिये क्षमा मांगी और कहा कि यह मेरे जीवन का बहुत बड़ा सौभाग्य है, मुझे आपने उन नौनिहालों के लिये आयुर्वेद का स्वर्णप्राशन जिसमें आचार्य श्री विद्यासागरजी महामुनिराज का आशीर्वाद शामिल है वह उन सभी नौनिहालों का भविष्य उज्जवल करेगा। उन्होंने सकल दि. जैन समाज के सभी पदाधिकारियों को धन्यवाद देते हुये कहा कि दूसरों की सेवा करना ही सबसे बड़ी सेवा है, उन्होंने मंचासीन सभी मुनिराजों से आशीर्वाद लेते हुये उनके चरणों का स्पर्श किया और कहा कि मेरे गुरुदेव आज भी मुझे याद है उनकी सजीव आंखें और उनका उठता हुआ हाथ उन्होंने कहा कि मैं सबसे ज्यादा भाग्यशाली हूं कि मुझे उनकी सेवा करने का सबसे ज्यादा अवसर मिला और इसी बहाने जब जब भी मैं उनके चरणों में पहुंचा सबसे ज्यादा आशीर्वाद भी मुझे मिला है। उन्होंने कहा कि आप इन बच्चों की भी आज की चिंता नहीं भविष्य के लिये उनकी चिंता कर रहे हैं। मुनि श्री ने 2006 की स्मृतियों को ताजा करते हुये कहा कि कुन्डलपुर में बड़े बाबा का गगन विहार आपके ही मुख्यमंत्रित्व काल में हुआ और मुझे याद है कि आपने अपनी कुर्सी की परवाह न करते हुये बड़े बाबा को नये आसन पर समस्त बाधाओं को दूर करते हुये विराजमान किया और छोटे बाबा आचार्य गुरुदेव के प्रति अपनी अनंत भक्ति और श्रद्धा प्रकट की। मुनिश्री आचार्य श्री के प्रकल्पों जिसमें बेटी पड़ाओ अभियान के अन्तर्गत प्रतिभा स्थलियों का निर्माण किया जिसमें आज पांच स्थानों पर लगभग 12 हजार के लगभग बेटियाँ संस्कार के साथ स्वालंबन तथा लौकिक शिक्षा के साथ ग्रहण कर रही हैं। उन्होंने स्मरण दिलाया और कहा कि आचार्य गुरुदेव ने 2014 में ही इसी विदिशा नगर से ''इंडिया नहीं भारत कहो'' का नारा दिया जिसे भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने आत्मसात किया। इस अवसर पर मुनिश्री निस्सीम सागर महाराज ने आचार्य गुरुदेव श्री विद्यासागर महाराज की जन कल्याणकारी नीतियों की चर्चा करते हुये कहा किं स्वर्णप्राशन एक आयुर्वेद की दवा ही नहीं है यह गुरुदेव का आशीर्वाद है। उन्होंने कहा कि यह गुरुदेव की दूरदर्शिता का ही परिणाम है कि भारत की प्रमुख जेलों में रह रहे कैदी आज हतकरघा को चलाकर न केवल अपने भविष्य को सुधार रहे हैं बल्कि उनको आत्मनिर्भर और सदाचारी बना रहे हैं जिससे उनके मन में कभी अपराधी बनने का भाव ही न आये। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि शिवराज सिंह चौहान ने प्रतीक स्वरूप छोटे बच्चों को स्वर्णप्राशन पिलाया। इस अवसर शीतलविहार न्यास के पूर्व अध्यक्ष बसंत जैन, अनिरुद्ध सराफ, भा.जा.पा. नेता राजेश जैन, महिला बाल विकास अधिकारी विनीता कांसवा, भा. जा. पा. महिला नेत्री मंजरी जैन, सपना जैन सहित बड़ी संख्या में महिला मंडल की सदस्यों के साथ समाज जन उपस्थित थे, कार्यक्रम का संचालन दीपक जैन ने किया।

केन्द्रीय सागर जेल के कैदी भाई को मिला हाथकरघा रोजगार का साधन

ब्र.डा. रेखा जैन

सागर, 1 जनवरी। केन्द्रीय जेल सागर में जेल से रिहा हुए कैदी भाई को आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज एवं नवाचार्य श्री 108 समय सागर महाराज जी के आशीर्वाद से संचालित श्री 108 विद्यासागर हाथकरघा केन्द्र को संचालित कर रही संस्था सक्रिय सम्यकदर्शन सहकार संघ ने श्री रूप सिंह अहिरवार पिता श्री परम अहिरवार उम्र 29 वर्ष, आमाखुर्द, श्यामपुरा जिला सागर को सागर जेल में रहते हुए हाथकरघा कार्य सिखाया। रिहाई पर संस्था के गणमान्य सदस्य श्री संतोष बिलहरा, श्री मनीष निमाण जक्शंन, श्री अखिलेश सी.ए., श्री मनोज हिल व्यू, श्री प्रियेश सी.ए., हाथकरघा उद्योग प्रभारी श्री शिवचरण नौद्या, जिला पंचायत कार्यालय एंव जेलर श्रीमती गीता राठौर, जेलर श्री मनोज मिश्रा, जेलर श्री हरिओम शर्मा, वरि. प्रहरी श्री संजय पाराशर, हाथकरघा प्रतिनिधि ब्र. डा. रेखा जैन एवं ब्र. डा. नीलम जैन द्वारा एक हाथकरघा मशीन धागा एवं समस्त सामान भेंट किया। भाई रूप सिंह अहिरवार ने बताया कि जेल में रहकर के भी पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी ने हाथकरघा सेंटर खुलवा कर उसे हाथकरघा जैसी विधा सिखा दी। अब वह घर में गांव में रहकर हथकरघा अपने परिवार के साथ चलायेगा। उसने आजीवन अंडा, मांस, मदिरा का त्याग किया और गांव के अन्य लोगों को हाथकरघा सिखाने का संकल्प लिया।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

VIJAY KUMAR GANGWAL
CROWN Enterprises Pvt. Ltd.
GUWAHATI-781001
Phone : 2517274, Mobile : 98640-20611
e-mail : distribution@crownenterprisesprivatelimited.com

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

With Best Compliments from
ASHOKA FURNISHINGS
a complete furnishing store
Babu Bazar, Fancy Bazar
GUWAHATI- 781001
0361- 2514118, 2637326Fax : 0361- 2637325
Sanmati Plaza, G. S. Road. Guwahati-781005 2457801, 2457802

स्वागत है जैन गजट के नये आजीवन सदस्यों का

आर. के. जैन-संध्या जैन, 5/2-ए, रेल विहार सेन्टर, 9-विद्याधर नगर जयपुर-302039 (राजस्थान) मो.-7742404370

सुरेन्द्र कुमार जैन-उर्मिला जैन
Villa No. 54 and 55, Kedia's The Kunba, Pratap Nagar, Near Sanganer SDM Court, Jaipur-302029 Mo. 9414308767

कैलाश चंद जैन -कैलासी देवी छाबड़ा, रानीपुरा वाले, खवास जी का बाग-149 दुर्गापुरा बस स्टैंड के पीछे, जयपुर-302018 मो. 8094628880

कैलाशचन्द-श्रीमती बसंती देवी जैन (गोयल), कडीला वाले, गोयल गारमेंट्स, मातु श्री काम्पलेक्स, जैन नसियां रोड, फागी, जिला जयपुर-303005 मो. 921417 9872

विवेक-आशा काला
रूबीलाइट, हाउस ए-52-बी शांति पथ, तिलक नगर, जयपुर-302004 (राजस्थान) मो. 9629066611

राजेश-सीमा बड़जात्या
एस-9, मंगल मार्ग, बापू नगर, जयपुर-302015 मो. 9785074581 (राजस्थान)

नयन जैन-मोनिका जैन, 51-52 राधा-निकुंज-सी खेजड़े का बास, इस्कॉन रोड, मानसरोवर, जयपुर-302020 मो. 9057256159

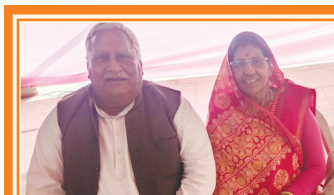

संतोष कुमार रांवका-श्रीमती स्नेहलता रांवका (माधोराजपुरा वाले), 11 गायत्री नगर-ए, एफ-1, महारानी फार्म, दुर्गापुरा जयपुर-302018 मो. 9351105559

डॉ. रामकिशोर जैन-श्रीमती निर्मला जैन मकान नं 2 बी 3, रंगबाड़ी योजना, विकास मार्ग, कोटा-324005 मो. 9414317375

जयकुमार गंगवाल-श्रीमती चंद्रकला गंगवाल (चकवाडा वाले) 65/76-बी, हीरापथ, मानसरोवर जयपुर-302020 मो. 9828332077

सुनील गंगवाल-श्रीमती सरला गंगवाल श्री मनोकामना ज्वैलर्स, नया बाजार, अजमेर-305001 (राजस्थान) मो. 9929292092

आप सभी महानुभावों ने 2100/- रु. प्रदान कर जैन गजट की आजीवन सदस्यता ग्रहण की है जिसके लिये जैन गजट परिवार आभारी है।
प्रेरणास्रोत-राजाबाबू गोधा, जैन गजट संवाददाता, फागी
- प्रकाशक

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

SANTOSH JAIN & ASSOCIATES
SWATI VINIMAY & CONSULTANCY PVT. LTD
ANAMICA TRADERS PVT. LTD.
L. N. FINANCE PVT. LTD.

OFFICE
CITY TRADE CENTRE,
Near Athgaon Flyover, A.T. Road, Guwahati-781001
M. : 94350-48488 (O) / 97060-48488 (R) / 8638773711

सी. ए. (डॉ.) संतोष काला | श्रीमती सरिता काला | संदीप-स्वाति पाटनी | श्रेयांस-स्नेहा काला

RESIDENCE : 401/501, Abhinandan Appartment, 4th Floor, H.S.Road, Chhatribari, Guwahati-781008
E-mail : casantoshkala@gmail.com

SHREE COMPLEX & SHREEMAN COMPLEX, P. O. BIJOYNAGAR-781122, DIST-KAMRUP (ASSAM)

कोटा में आर्यिका विशुद्धमति जी ससंघ का जयकारों के साथ हुआ भव्य प्रवेश

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

आचार्य 108 श्री निर्मल सागर जी महाराज की सुयोग्य शिष्या गणिनी आर्यिका 105 विशुद्धमति माताजी ससंघ का कोटा शहर में 21 दिसम्बर को जयकारों के साथ भव्य मंगल प्रवेश हुआ, जानकारी पर ज्ञात हुआ कि उक्त संघ सवाई माधोपुर में चातुर्मास करने के बाद विभिन्न शहरों, कस्बों में धर्म की प्रभावना बढ़ाते हुए पाटन नगरी में होते हुए कोटा शहर की पावन धरा पर पहुंचा जहां पर नगर वासियों ने बैंड बाजों के द्वारा संघ की भव्य आगवानी की तथा संघ को जयकारों के साथ नगर भ्रमण करवाते हुए तलवंडी जैन मंदिर लाया गया, वहां पर सौभाग्यवती महिलाओं द्वारा संघ की मंगल कलशों के द्वारा भव्य आगवानी करके आरती करने के बाद संघ का पाद प्रक्षालन करके संत भवन में ठहराया। कार्यक्रम में परम पूज्या पट्ट गणिनी आर्यिका 105 विज्ञमति माताजी ने भरी धर्म सभा में श्रद्धालुओं सम्बोधित करते हुए अपने मंगलमय उद्बोधन में बताया कि सूर्य को नमस्कार करना वैदिक परंपरा नहीं जैन परंपरा है और कहा कि भव्य बंधुओ, जैन दर्शन और भारतीय मनीषा के अनुसार दोनों ही संस्कृति अपने आप में समग्र सुषमा को अपने अंग में सम्माहित किए हुए हैं, आत्मिक सुषमा का और प्राकृतिक सुषमा का अहसास करने के लिए चेतन को स्वयं कर्म करने पड़ते हैं, कहा गया है कि संतान की प्राप्ति के लिए माता-पिता की सेवा और पर्यान्तर की आत्मिक व्यवस्थाएं चेतन को स्वयं

करनी पड़ती है। आत्मिक परंपराओं को बढ़ाना है तो स्वयं को साधना की वेदी पर बैठना होगा और व्यावहारिक संदृष्टियों को पारदर्शी करना हो तो वृद्ध माता-पिता की सेवा करनी होगी। भारतीय मनीषा की यह तीन संस्कृतियां जैन दर्शन से ही प्रवाहित हुई है, सूर्य को नमस्कार करना जैन परम्परा है, आपको सुनकर आश्चर्य होगा कि सूर्य को नमस्कार करना जैन परम्परा है, यह वैदिक परंपरा नहीं है, जब मकर संक्रांति का सूर्य अपनी गलियों से गमन करता है प्रथम चक्रवर्ती भरत अपने 84 मंजिल के भवन की छत पर देह शुद्धि की व्यवस्था में जुट रहे होते हैं, उनकी अनायास ही दृष्टि पहुंच जाती है कि मेरे महल की छत से सूर्य विमान गुजर रहा है, महानुभावों इंद्रियों की पुष्टता जिनकी उत्कृष्ट थी उन्होंने सूर्य विमान के अन्दर अकृत्रिम प्रतिमाओं का दर्शन किया, तो दर्शन खाली हाथ कैसे करें क्योंकि जैसे दर्शन करेंगे वैसा ही तो फल मिलेगा, चक्रवर्ती भरत ने विचार किया कि मैं जब तक नीचे से कुछ सामग्री लेकर आऊंगा तब तक गतिमान निरंतर जो सूर्य का विमान है वह आगे बढ़ जाएगा अब इसको क्या अर्घ्य दिया जावे तो जो स्नान के लिए शुद्ध जल रखा था। उस जल को ही जिनेंद्र प्रभु के चरणों में मानो जल से अभिषेक कर रहे हो और धारा छोड़ देते हैं। यह परंपरा जिस-जिस जिसने भी देखी उनको लगा क्योंकि कहा गया कि जो (महाजन) महान लोग होते हैं, गुरु होते हैं, विद्वान बहुजन होते हैं और वे कहते हैं कि जो वह करें वह हमको नहीं करना चाहिए, उन महान उत्तम देहधारी तदभ्रव मोक्ष गामी क्षणिक सम्यकदृष्टि चक्रवर्ती भरत ने जब शुद्ध जल की धारा जिनेंद्र भगवान के अभिषेक के लिए शुद्ध भावों से दी तो देखने वाले लोगों ने देखा कि अरे अपने चक्रवर्ती ही सूर्य को नमस्कार कर रहे हैं तो सूर्य को नमस्कार करने की परंपरा चल पड़ी, वह सूर्य को नमस्कार नहीं था जो घर के अंदर अपने मन में देवता बैठा था उसको नमस्कार था। अपने घर में कौन बैठा है अपनी आत्मा बैठी है, और आपके मकान के अंदर माता-पिता पति-पत्नी एवं पुत्र पुत्री आदि बैठे हैं, मकान ईट और पत्थरों से बनता है और घर जिसके अंदर शोधन आत्मार्थि अपना शोध करता है। उक्त कार्यक्रम बाद आर्यिका श्री ने सभी भक्तजनों को मंगलमय आशीर्वाद प्रदान किया।

जैन शोध संस्थान पहली बार शुरू करेगा स्नातक पाठ्यक्रम

नौ जनवरी को समिति की बैठक में लगेगी मुहर, चार साल का होगा कोर्स, जुलाई में शुरू होंगी कक्षाएं, तीन माह पहले शुरू होंगे आवेदन

लखनऊ। उत्तर प्रदेश जैन शोध संस्थान पहली बार आगामी सत्र से जैन दर्शन एवं प्राकृत विषय में स्नातक कोर्स शुरू करेगा। इसकी कक्षाएं जुलाई 2026 से शुरू होंगी और आवेदन फॉर्म तीन माह पहले अप्रैल में आने की उम्मीद है। इस संबंध में 9 जनवरी को होने वाली समिति की बैठक में इस कोर्स पर मुहर लग जाएगी। इससे पहले संस्थान में केवल छह माह के सर्टिफिकेट कोर्स ही संचालित हो रहे थे। संस्कृति विभाग की स्वायत्तशासी संस्था उत्तर प्रदेश जैन विद्या शोध संस्थान के उपाध्यक्ष प्रो. अभय कुमार जैन ने बताया कि नई शिक्षा नीति के तहत स्नातक कोर्स की शुरुआत भातखंडे संस्कृति विश्वविद्यालय की ओर से की जा रही है। इसके तहत चार वर्षीय कोर्स का संचालन होगा, जिसमें आठ सेमेस्टर होंगे।

पहले दो सेमेस्टर पूरे करने पर सर्टिफिकेट, चार सेमेस्टर पर डिप्लोमा, छह सेमेस्टर पर स्नातक की डिग्री और आठ सेमेस्टर पूरे करने पर बीए ऑनर्स की डिग्री दी जाएगी। स्नातक की कक्षाओं का संचालन गोमतीनगर स्थित अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध संस्थान के कक्षों में ही किया जाएगा। यह पाठ्यक्रम जैन दर्शन के संबंध में विस्तृत जानकारी देगा और आगे शोध छात्रों के लिए काफी मददगार भी साबित होगा।

एक लाख का तीर्थंकर ऋषभदेव सम्मान

देगा संस्थान – जैन शोध संस्थान की ओर से राष्ट्रीय स्तर के सात सम्मान दिए जाएंगे जिसमें से किशोर चंद्र जैन की स्मृति में एक लाख रुपये का तीर्थंकर ऋषभ जैन सम्मान दिया जाएगा। संस्थान के उपाध्यक्ष प्रो. अभय कुमार जैन ने बताया कि 51-51 हजार रुपये के तीन सम्मान क्रमशः निर्मल कुमार सेठी की स्मृति में तीर्थंकर महावीर अहिंसा सम्मान, हरक चंद्र जैन सेठी की स्मृति में आचार्य कुंद-कुंद सम्मान दिए जाएंगे। यह सभी सम्मान राष्ट्रीय स्तर के हैं जिनकी प्रक्रिया पूरी हो चुकी है। दार्शनिक जुगल किशोर जैन की स्मृति में इस बार युगल चेतना सम्मान दिया जाएगा जिसके लिए छह जनवरी तक आवेदन मांगे गए हैं। इसके अलावा राज बहादुर व स्व. धर्मवीर जैन की स्मृति में 31 हजार रुपये का भरत चक्रवर्ती सम्मान, नवीन जैन की स्मृति में 21 हजार रुपये का श्री गणेश प्रसाद वर्णी श्रुत आराधक सम्मान और राजकुमार-संतोष कुमार जैन की स्मृति में 21 हजार रुपये का श्रुत संवर्धन सम्मान दिया जाएगा। प्रो. अभय कुमार जैन ने बताया कि सम्मानों से संबंधित संपूर्ण जानकारी संस्थान की वेबसाइट upjvri.org.in पर मौजूद है।

परम पूज्य, वात्सल्य वारिधि, पट्टाचार्य 108 श्री वर्धमान सागर जी महाराज ससंघ के चरणों में शत् शत् नमन

आचार्य वर्धमान सागर वचन

जिनके चरणों में लगी हुई तीर्थों की पावन रजकण,
बड़े भाग्य से मिल पाता उन चरणों का स्पर्शन
जिनकी हितमित प्रिय वाणी हरती है धरती का क्रंदन
ऐसे आचार्य श्री वर्धमान सागर जी के चरणों में हमारा शत् शत् वंदन

संयम की साधना का अर्थ होता है कषाय का गलना

-: नमनकर्ता/पुण्यार्जक :-

श्रीपाल सबलावत, सुरेश सबलावत, हुलासचंद सबलावत परिवार रेडिप्रिण्ट जयपुर

कैलाशचंद पाटनी किशनगढ़ (उरसेवा वाले)
नवरत्नमल पाटनी अष्टम प्रतिमा धारी, श्यामनगर, जयपुर

धर्मचंद पहाड़िया जयपुर राज. केन्द्रीय कार्याध्यक्ष तीर्थ संरक्षिणी महासभा

विज्ञापन प्रेषक: R.K.Advertising मदनगंज किशनगढ़ द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatin777@gmail.com

नववर्ष का नवप्रभात : नई चेतना, नई दिशा, नई महासभा

संपादकीय

नववर्ष केवल कैलेंडर का परिवर्तन नहीं होता, वह समाज की चेतना में नवस्फूर्ति, आशा और संकल्प का संचार करता है। 2025 की विदाई से ठीक पूर्व भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा में हुए नेतृत्व परिवर्तन ने दिगम्बर जैन समाज के हृदय में ऐसी ही नवचेतना का संचार किया है। बधाइयों और शुभेच्छाओं का प्रवाह इस बात का प्रमाण है कि महासभा आज भी समाज की आत्मा से जुड़ी हुई संस्था है।

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा केवल एक संगठन नहीं, बल्कि आर्ष परम्परा की संवाहक, संरक्षणकर्ता और मार्गदर्शक संस्था है। यह वह विराट मंच है जहाँ सम्पूर्ण दिगम्बर जैन समाज की आकांक्षाएँ, संस्कार और संस्कृतियाँ एक सूत्र में बंधती हैं। सरसेठ हुकुमचंद जी कासलीवाल, सेठ भागचंद जी सोनी, श्री निर्मल कुमार जी सेठी जैसे समाज श्रेष्ठियों का नेतृत्व इस संस्था को गौरवशाली विरासत के रूप में प्राप्त हुआ है।

इसी परम्परा को आगे बढ़ाते हुए श्री गजराज जी गंगवाल का दूसरी बार सर्वसम्मति से राष्ट्रीय अध्यक्ष चुना जाना महासभा की निरंतरता, स्थिरता और विश्वास का प्रतीक है। उनके नेतृत्व में गठित नई, ऊर्जावान और व्यापक राष्ट्रीय समिति यह संकेत देती है कि महासभा समय के साथ कदमताल करते हुए परम्परा और परिवर्तन के मध्य संतुलन स्थापित करने को तत्पर है।

परम्पराओं का निर्वहन और नवपीढ़ी के साथ सामंजस्य – यह युग की सबसे बड़ी चुनौती भी है और सबसे बड़ी आवश्यकता भी। विश्वास है कि नवीन समिति इस चुनौती को अवसर में परिवर्तित करते हुए महासभा को समाज की अपेक्षाओं के अनुरूप नई दिशा प्रदान करेगी।

गौरवशाली अतीत से उज्ज्वल भविष्य तक – श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा का उद्‌भव उत्तर प्रदेश के पवित्र नगर मथुरा से हुआ - वही मथुरा, जो श्रुतकेवली जम्बूस्वामी की निर्वाण स्थली के रूप में जैन इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित है। चौरासी मथुरा की पुण्यधरा पर स्वर्गीय राजा लक्ष्मणदास जी द्वारा सन् 1895 में स्थापित यह संस्था आज अपने चौदहवें दशक में प्रवेश कर चुकी है।

नवजागरण काल में जन्मी यह महासभा केवल समय की साक्षी नहीं रही, बल्कि समाज को दिशा देने वाली प्रेरक शक्ति भी बनी। दिगम्बर मुनिराजों के आशीर्वाद से यह संस्था पुष्पित-पल्लवित हुई और आर्ष परम्परा की शुद्ध धारा को जन-जन तक पहुँचाने का माध्यम बनी। पूज्य चरित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांति सागर जी महाराज से लेकर वर्तमान पट्टाचार्य परमपूज्य आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज तथा पूज्य गणेशप्रसाद जी वर्णी का पावन आशीर्वाद इस संस्था की आत्मा में समाहित है।

आज श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा सम्पूर्ण भारतवर्ष में दिगम्बर जैन समाज की पहचान, प्रतिष्ठा और विश्वास का प्रतीक बन चुकी है।

नवीन समितिः संकल्प और समर्पण का संगम – राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गजराज जी गंगवाल के नेतृत्व में कार्याध्यक्ष श्री रमेश जी तिजारिया, श्री प्रकाशचंद बड़जात्या एवं श्री राजेश बी. शाह, महामंत्री श्री पवन गोधा, कोषाध्यक्ष श्री प्रकाश बोहरा सहित विस्तृत राष्ट्रीय समिति ने अपने दायित्व का निर्वहन प्रारम्भ कर दिया है। जैन गजट में प्रकाशित यह सूची इस बात का साक्ष्य है कि महासभा में सम्पूर्ण राष्ट्र का दिगम्बर जैन समाज प्रतिबिंबित होता है।

राजस्थान के निवाई में विराजित परमपूज्य आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज ससंघ के सान्निध्य में देव-शास्त्र-गुरु की पावन उपस्थिति में शपथ ग्रहण - यह क्षण महासभा के इतिहास में एक आध्यात्मिक और प्रेरक अध्याय के रूप में अंकित हो गया है।

गुरु मंत्र – जैसे जीवन पथ पर चलने के लिए दो चरण आवश्यक हैं, वैसे ही जीवन को संतुलित और सार्थक बनाने के लिए अनेकांत और स्याद्वाद अनिवार्य हैं।

इन्हीं मंगल भावनाओं के साथ।।
राजेन्द्र जैन महावीर,
सह-संपादक
मोबा. 9407492577

हुक्का लाउंज पब संस्कृति, भटकती किशोर पीढ़ी

विजय कुमार जैन, राघौगढ़ (म.प्र.)

वर्तमान में युवाओं में नशा करने की आदत तेजी से बढ़ रही है। अनेक प्रकार के नशे के साधन आसानी से उपलब्ध हो रहे हैं। बच्चे किशोर अवस्था में एवं युवा होते ही सदमार्ग पर न चलकर भटक रहे हैं। इस भटकाव के लिये वर्तमान परिवेश तो दोषी है ही साथ ही माता-पिता पालकों की भी यह जिम्मेदारी है कि वे अपने बच्चों की हर गतिविधि पर पैनी नजर रखें। यह देखें कि हमारे बच्चे कहाँ जा रहे हैं उनके मित्र कौन है तथा देर रात तक कहाँ रहते हैं, क्या वे नशा कर रहे हैं।

वर्तमान में हुक्का से कश खींचकर नशा करने की प्राचीन पद्धति को आधुनिक रूप देकर हुक्का लाउंज एंड पब नाम दिया गया है। दिल्ली, मुबंई, कोलकाता, चेन्नई आदि बड़े महानगरों के मालों में हुक्का पब संचालित हैं। एक घटना जो आज से लगभग दस वर्ष पूर्व की है उसका उल्लेख करना प्रासंगिक है। दिल्ली के समीप गुरु ग्राम पूर्व नाम गुड़गांव में माल में 100 लड़के लड़कियां शराब के नशे में पकड़े गये, पकड़े गये लड़के लड़कियों में सभी 14 से 20 वर्ष के बीच के थे और अच्छे स्कूलों में पढ़ते थे। 'सेक्स और स्मोक' पार्टी का टाइटल था। एक लड़के के जन्मदिन पर दी जा रही इस पार्टी का निमंत्रण सोशल नेटबर्किंग साइड पर दिया गया था। आश्चर्यजनक बात यह है कि इस पार्टी में जिन बच्चों ने भाग लिया था, उन्हें यह पता नही था, जन्मदिन किसका है। भारतवर्ष में अनेक प्रदेशों में विशेष रूप से हरियाणा, पंजाब, राजस्थान एवं राजस्थान से लगे हुए मध्यप्रदेश के कुछ क्षेत्र आदि में आज भी हुक्का से नशा करने का प्रचलन है। गाँव में चार या पाँच बुजुर्ग एक साथ बैठकर हुक्का से नशा करते हैं। हुक्का में तम्बाकू डालकर धुआं के कश लिये जाते हैं। कुछ वर्ष पहले तक देश में पब और लाउंज का नाम नहीं था। अचानक इनका जाल फैलता जा रहा है। पब होटलों और मालों में चल रहे हैं युवाओं के साथ किशोर इनकी ओर जोर-शोर से आकर्षित हो रहे हैं। किशोरावस्था में बच्चों को पार्टी करना, घूमना पसंद होता है। इस उम्र में वे हर वह काम करना चाहते हैं जो उन्होंने आज तक नहीं किया है। पब अथवा हुक्का लाउंज में किशोरों को निकोटिन भर कर परोसा जाता है, जिसे आज किशोर बड़े शौक से लेते हैं। सरकार ने हुक्का बार पर सन् 2011 में क्रिमिनल प्रोसीजर कोड के सेक्सन 144 के तहत इसलिए रोक लगायी थी क्योंकि हुक्का बार बाले निकोटिन मिले तम्बाकू को ग्राहकों को दे रहे थे। परन्तु बार मालिकों ने कानून की धज्जियां उड़ा दी और नये-नये नामों से हुक्का से नशा कराया जा रहा है। हुक्का का होटलों में कानून से बचाव के लिये परशियनसीसा, वोडका फ्लेवर अथवा हर्बल हुक्का के नाम से नशा कराया जा रहा है।

मेरे मित्र ने एक घटना सुनायी वे दिल्ली में एक माल में शॉपिंग के लिये गये थे माल में पब के बाहर एक महिला लम्बे समय से हंगामा कर रही थी। वह चिल्ला-चिल्लाकर कह रही थी कि मेरा 14 वर्षीय बेटा पब के अंदर नशा कर रहा है। मुझे उसे लेने अंदर नहीं जाने दिया जा रहा है। यह देख रहे कुछ लोग बच्चे को दिये संस्कारों पर प्रश्न चिन्ह लगा रहे थे, कुछ पब के मैनेजर के व्यावसायिक दृष्टिकोण एवं मनमानी का विरोध कर रहे थे। पब के मैनेजर का कहना था कि इस उम्र में लड़के पब में आते ही हैं। कुछ देर में लड़का बाहर आया और महिला अपने बेटे को लेकर चली गई। विचारणीय प्रश्न यह है कि ऐसा क्या आकर्षण है किशोर पीढ़ी में जो अपने परिजनों से झूठ बोलकर पब में जाने मजबूर हो रहे हैं। अचानक आयी पब संस्कृति की ओर किशोर भागे जा रहे हैं और कानून कागजों की शोभा बढ़ा रहा है। पब संचालकों व कानून के रक्षकों की मिलीभगत से ही यह विकृति नई पीढ़ी में जोर से बढ़ रही है। गत् पांच वर्ष पूर्व हम सामाजिक मीटिंग में भाग लेने दिल्ली रेल से पहुंचे। रेल से रविवार को प्रातः 6 बजे हजरत निजामुद्दीन रेल स्टेशन पर उतरे। स्टेशन से बाहर निकल कर टेक्सी से गंतव्य की ओर प्रस्थान किया तो हम देखते हैं युवा युवक युवतियों की भारी भीड़ आ रही है। मैंने अपने अभिन्न मित्र से जिज्ञासा से पूछा यह भीड़ कहाँ से आ रही है? उन्होंने कहा ये लड़के लड़की वे हैं जो उच्च अध्ययन हेतु दिल्ली आये हैं। ये शनिवार को रात में होटल पहुंचते हैं, होटल में सारी रात वाय फ्रेंड और गर्ल फ्रेंड के जोड़े तरह तरह के नशे, सेक्स और मौज मस्ती करते हैं। ये सब सुबह होटल से निकल कर घर जा रहे हैं। मित्र ने कहा माता-पिता यह समझ रहे हैं हमारा बेटा या बेटी पढ़ाई कर रहे हैं। पढ़कर बड़े इंजीनियर या अधिकारी बनेंगे, जबकि बच्चे माँ बाप को धोखा दे रहे हैं।

पाश्चात्य संस्कृति के बढ़ते प्रभाव से संयुक्त परिवार समाप्त होने के साथ एकल परिवार की परंपरा चल रही है। संयुक्त परिवार में चाचा-चाचाजी, बड़े भाई-भाभी, बहन परिवार के छोटे किशोरों को साथ रखकर संस्कार देते थे, परिवार के रीति रिवाज सिखाते थे, उनके क्रियाकलापों पर नजर रखते थे। एकल परिवार में माता-पिता दोनों नौकरी में व्यस्त रहते हैं। ऐसे में किशोर अकेलेपन में दोस्तों की तलाश करते हैं, दोस्तों के साथ अकेलापन दूर करने पब और होटलों के माध्यम से नशा करने की बुरी आदतों में पड़ रहे हैं। सम्पन्न परिवार के बच्चे पब में जाना फेंसन और स्टेट्स की बात मानते हैं। पब एवं हुक्का लाउंज के माध्यम से 14 से 18 वर्ष के बच्चे जो स्कूल कालेज में पढ़ते हैं, उनमें नशे की बढ़ती प्रवृत्ति रोकना माता-पिता के साथ साथ शिक्षकों, प्राचार्यों की जिम्मेदारी है। किशोरावस्था में नशे की लत किशोरों का जीवन बर्वाद कर रही है। इस नशे की प्रवृत्ति को रोकने विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में भी जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किये की महती आवश्यकता है।

महासभा (तीर्थ संरक्षिणी) की गतिविधियां एवं आगामी योजना

राजकुमार जैन सेठी
महामंत्री
तीर्थ संरक्षिणी महासभा

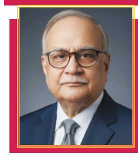

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा की स्थापना सन् 1894 में सेठ राजा लक्ष्मणदास जी ने मथुरा में की थी तब से अभी तक 32 श्रेष्ठीगण महासभा के अध्यक्ष पद को सुशोभित कर चुके हैं। स्व. निर्मल कुमार जी सेठी 40 वर्षों तक महासभा के अध्यक्ष रहे उन्होंने अध्यक्ष बनने के बाद भारतवर्ष के सभी 28 प्रान्तों में महासभा की प्रान्तीय शाखाओं की स्थापना की। तीर्थक्षेत्र कमेटी का गठन भी महासभा ने 1902 में किया तथा श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ संरक्षिणी महासभा की स्थापना स्व. निर्मल कुमार जी सेठी ने 1998 में महावीर जी में की थी। इस प्रकार से अब तक करीब 770 मंदिरों का जीर्णोद्धार कार्य हो चुका है विगत 3 वर्षों में करीब 100 मंदिरों का जीर्णोद्धार कार्य हुआ है।

तीर्थ संरक्षिणी महासभा की गतिविधियां एवं आगामी योजना

1. पश्चिम बंगाल के पुरूलिया जिले में प्राचीन मंदिरों का जीर्णोद्धार जनवरी 1994 में स्व. निर्मल कुमार जी सेठी की प्रेरणा से एवं स्व. श्री रामेश्वर लालजी के निर्देशन में पाकवीरा में भूमि पूजन एवं शिलान्यास के साथ जीर्णोद्धार का कार्य प्रारंभ किया गया था। वह अनवरत रूप से चल रहा है। बंगाल में एएसआई के अनुसार 1000 साईट हैं। 120 स्थानों पर प्राचीन मंदिरों की जानकारी प्राप्त हुई 38 स्थानों पर मूर्तियों को विराजमान कराया जा चुका है। आगामी 10 वर्षों में 82 स्थानों पर जीर्णोद्धार कार्य कराने की योजना है।

3 अक्टूबर 2025 को श्री विनोद जी सरदार एवं डॉ. प्लास हलदार का कोलकाता मेरे निवास स्थान पर आगमन हुआ उन्होंने जानकारी दी कि साउथ में 24 परगना जिले में सुंदरबन है। जिस प्रकार से पुरूलिया जिले के गांव-गांव में मूर्तियाँ हैं उसी तरह से सुंदरवन के गांव-गांव में मूर्तियां हैं। पोन्ड्रा जैन जाति की संख्या 30 से 40 लाख है। यह लोग अपने को भद्रबाहु जो अपना अंतिम श्रुत केवली था उसका वंशज मानते हैं और जैन धर्म को मानते हैं। यहां पर आधे से ज्यादा लोग काम के सिलसिले में बाहर चले गये है। यहां की समाज ने 5 बीघा जमीन देने की बात कही है जहां पर जैन मंदिर, म्यूजियम एवं छात्रावास आदि बनाये जाने की योजना है।

2. उड़ीसा प्रान्त - उड़ीसा में 110 स्थनों पर मूर्तियों का पता चला है। आगामी 10 वर्षों में 110 स्थानों की मूर्तियों को विनय पूर्वक विराजमान करवायेंगे। भारत सरकार द्वारा निर्मित 7 म्यूजियमों का जीर्णोद्धार तीर्थ संरक्षिणी महासभा द्वारा कराया गया है। श्री निर्मल कुमार जी जैन सेठी सन् 2000 के आसपास उड़ीसा गये थे वहां पर काफी संख्या में मूर्तियां खेतों में पड़ी थीं इसके अलावा 2300 वर्ष प्राचीन शिलालेख खण्डगिरि-उदयगिरि पहाड़ी पर हैं जिसमें भारतवर्ष अंकित है तथा णमोकार लिखा हुआ है। पहाड़ी की गुफाओं में मूर्तियां विराजमान हैं अभी उन पर कुछ अन्य जातियों का कब्जा चल रहा है। इन मूर्तियों को कब्जा मुक्त कराने हेतु हमने माननीय
प्रधानमंत्री जी को पत्र दिया था उन्होंने आश्वासन दिया है कि शीघ्र ही मूर्तियों को कब्जा मुक्त करने और (विश्व धरोहर) वर्ड हेरिटेज में शामिल किया जायेगा।

3. उत्तर प्रदेश - उत्तर प्रदेश में 45 स्थानों पर प्राचीन मंदिरों का जीर्णोद्धार कार्य हो चुका है इसके साथ ही उत्तर प्रदेश में हमने 6 गैलरियां बनवाई हैं। लखनऊ, मथुरा, झांसी, सीरोन मड़ावरा एवं गोरखपुर में।

4. मध्य प्रदेश प्रान्त में 108 स्थानों पर जीर्णोद्धार का काम हो चुका है। जिला -पन्ना, मोहन्द्रा में काफी मूर्तियां थीं अतः संग्रहालय बनवाकर मूर्तियों को विराजमान किया गया इसी प्रकार से संहयाचल सिद्धक्षेत्र जो इंदौर नेमावर मार्ग पर इंदौर से 70 किमी दूरी पर बीजवाड-पानीगांव में स्थित है। यहां पर एक संग्रहालय का निर्माण कर जो भी मूर्तियां आसपास के स्थानों पर पड़ी हैं उनको सुरक्षित किया गया। निर्ग्रंथ सेंटर ऑफ आर्कियोलॉजी के माध्यम से हमें जिन जिन मूर्तियों की जानकारी प्राप्त हो रही है उन मूर्तियों को हम विनयपूर्वक विराजमान करायेंगे।

5. महाराष्ट्र प्रान्त में 120 मंदिरों के साथ कोल्हापुर महाराष्ट्र के भोगोली, इब्राहिमपुर जैसे बड़े मंदिरों का जीर्णोद्धार कार्य हो चुका है। आगामी वर्षों में अधिक से अधिक मंदिरों का जीर्णोद्धार कराये जाने का लक्ष्य है।

6. राजस्थान - राजस्थान प्रान्त में करीब 200 मंदिरों का जीर्णोद्धार का बहुत बड़ा कार्य हुआ है। राजस्थान के कई ग्रामों में समाज व्यापार के सिलसिले में गांव छोड़कर चली गयी, इन गांव के प्राचीन मंदिरों के करीब 20 प्रपोजल प्राप्त हुये हैं। 10 मंदिरों के जीर्णोद्धार हेतु राशि भेज दी गयी है अन्य मंदिरों का पूर्ण विवरण प्राप्त होने के बाद जीर्णोद्धार कराया जायेगा।

7. गुजरात प्रान्त में 24 स्थानों पर जीर्णोद्धार का काम हो चुका है। हम लोगों ने 200 से ज्यादा स्थानों पर प्राचीन मंदिरों की खोज की है जहां पर जैन समाज व्यापार के सिलसिले में बाहर चली गयी है। आगामी वर्षों में 100 मंदिरों का जीर्णोद्धार कराने का लक्ष्य है। ईडर से करीब 20 किमी. दूर ग्राम दावदा में पुरातत्व विभाग द्वारा खुदाई के दौरान करीब 42 प्राचीन मूर्तियां खड्गासन एवं पदमासन खण्डित प्राप्त हुयी थीं। ईडर समाज ने पुरातत्व विभाग में मूर्तियों को प्राप्त करने हेतु आवेदन किया है तथा म्यूजियम बनाने की बात को स्वीकार किया है। ईडर समाज द्वारा प्रदत्त जमीन में शीघ्र ही म्यूजियम का कार्य शुरू कर रहे हैं।
रायगढ़ (गुजरात) के 1 हजार वर्ष प्राचीन बावन जिनालय की शिलाओं को तराशकर इन्हीं शिलाओं से मंदिर का जीर्णोद्धार कार्य पूरा हो चुका है। मंदिर जी में जिन प्रतिमाओं के पंचकल्याणक हेतु परम पूज्य आचार्य वर्धमान सागर जी महाराज ने पंचकल्याणक के लिए अपना शुभाशीर्वाद देकर स्वीकृति प्रदान कर दी है। अतिशीघ्र पंचकल्याणक की तिथि निश्चित कर वेदी प्रतिष्ठा करवायी जायेगी।

8. केरल - केरल में कई स्थानों पर प्राचीन मूर्तियां एवं मंदिर प्राप्त होने के समाचार हमें मिले हैं। अभी श्री चन्द्रनाथगिरि मंदिर कलपेट्टा की पहाड़ी पर चरण चिन्ह प्राप्त हुये थे। तीर्थ संरक्षिणी महासभा द्वारा वहां पर लोहे की बाउन्ड्री लगाकर उन्हें सुरक्षित किया गया है। यहां पर चित्राल की गुफायें है पहाड़ी पर बहुत सी मूर्तियां उकेरी हैं। यहां पर एक यूनिवर्सिटी 2000 वर्ष पूर्व थी जिसमें विदेशों से विद्यार्थी पढ़ने आते थे ऐसा उल्लेख मिला है। गुफायें अभी भी अच्छी हालत में हैं। केरल में जैनों का बहुत बड़ा साम्राज्य पाया गया है यहां पर काफी मंदिर मिले हैं कुछ अन्य समाज के कब्जे में भी हैं शीघ्र ही मंदिरों को अपने कब्जे में लेकर जीर्णोद्धार कार्य कराया जायेगा।

9. तमिलनाडु में 19 स्थानों पर जीर्णोद्धार का काम हो चुका है। तमिलनाडु की प्रांतीय समिति है उनको जिन प्राचीन क्षेत्रों की जानकारी प्राप्त होती हे वह उन मंदिरों का जीर्णोद्धार कार्य कराते हैं। 10. आंधप्रदेश तेलंगाना में अभी तक कुछ नहीं हो सका है, यहां पर 34 स्थानों पर प्राचीन मंदिरों की जानकारी प्राप्त हुयी है। आगामी 10 वर्षों में इन मंदिरों का जीर्णोद्धार कराने की योजना है। यहां पर जैन धर्म के बहुत से शिलालेख मौजूद हैं यह शिलालेख पहाड़ों पर पत्थरों में काफी संख्या में अंकित हैं।

11. कर्नाटक में 128 मंदिरों का जीर्णोद्धार कार्य हो चुका है। इस प्रकार कर्नाटक राज्य में करीब 55 स्थानों पर प्राचीन जीर्णशीर्ण मंदिर मूर्तियों सहित प्राप्त हुये हैं। तीर्थ संरक्षिणी महासभा के सहयोग से करीब 25 मंदिरों का जीर्णोद्धार कार्य करा दिया है आगामी वर्षों में अन्य स्थानों पर कार्य शुरू किया जा रहा है।

12. गोवा में जैन मंदिर प्राप्त हुये हैं। आज भी बहुत बड़े टीले के रूप में वहां एएसआई के पास स्थान पड़ा है। जिसमें हमारे मंदिर व मूर्तियां दबी हैं। कार्यवाही चल रही है। आगामी वर्षों में इन मंदिरों का जीर्णोद्धार कार्य किया जायेगा। 13. आसाम में 1974 में जैसे ही आर्यिका इन्दुमती माताजी, सुपार्श्वमती माताजी के सानिध्य में सूर्यपहाड़ तीर्थक्षेत्र का पता चला तब श्री निर्मल कुमार जी सेठी के प्रयास से आसाम सरकार से 52 बीघा जमीन क्षेत्र के लिये प्राप्त हो गई उसके बाद तीर्थ संरक्षिणी महासभा के माध्यम से वर्ष 2000 में परम पूज्य दयासागर जी महाराज के सानिध्य में मंदिर का निर्माण करवाकर पंच कल्याणक करवाया गया था। स्व. निर्मल कुमार जैन सेठी का 86 वां जन्मदिवस 8 जुलाई 2024 को खूब सूर्यपहाड़ में खूब धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर भक्ताम्मर विधान का आयोजन किया गया तथा सूर्यपहाड़ का शीघ्र ही विकास करके 5 वर्ष के भीतर सूर्यपहाड़ को विकसित अतिशय क्षेत्र बनाने की घोषणा की गयी। सेठी जी की पुण्य स्मृति में सूर्यपहाड़ (आसाम) में निर्मल भवन (गेस्ट हाउस) का उद्घाटन एवं सेठी जी के स्टेच्यू का लोकार्पण किया गया।
आगामी वर्षों में हमारा यही उद्देश्य है कि 120 वर्ष प्राचीन जिन मंदिरों की जानकारी हमें प्राप्त होगी उनका जीर्णोद्धार, भूगर्भ से प्राप्त प्राचीन प्रतिमाओं को विनयपूर्वक विराजमान करवाना, जिन स्थानों पर अधिक संख्या में खण्डित मूर्तियां प्राप्त होंगी उन्हें म्यूजियम बनाकर सुरक्षित करना एवं अन्य समाज के कब्जे से जैन समाज की प्राचीन धरोहर की रक्षा करना।

इंटेलिजेंस (मन) और ब्रिलियंस (बुद्धि) की रोचक वार्ता

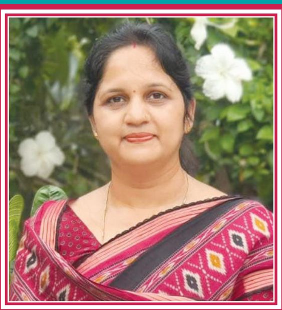

बरखा विवेक बड़जात्या जैन
बीकानेर, जिला धार

एक शाम, मेरे मन और मेरी बुद्धि फुर्सत के क्षणों में बतिया रहे थे। दोनों में अपने महत्व को बताने की होड़ लगी थी और मेरी चेतना अंतर में लीन थी, यही वह क्षण था जब मैं दोनों की बातें सुनने में समर्थ थी। जो सार वार्ता का मुझे समझ में आया, वह जीवन में सकारात्मक और सफलता का दीप जलाने के लिए पर्याप्त था।

इंटेलिजेंस मेरे मन की उपलब्धि थी, तो ब्रिलियंस मेरी बुद्धि की। मन तो मन है, अपनी चलाता है और चलाएं भी क्यों न, क्योंकि मन के तले पर ही इंटेलिजेंस रहता है, जो व्यक्ति की सफलता में महत्वपूर्ण रोल अदा करता है। मेरी यह बातें अचरज भरी जरूर हैं, पर बहुत हद तक हमारे जीवन को प्रभावित करती हैं।

आपने देखा ही होगा कि कुछ लोग बहुत कम मेहनत से बहुत कुछ सफलता हासिल कर लेते हैं, वहीं कुछ लोग जीवन में ठोकर खाते हुए दर-दर के धक्के खाते हैं तो भी अपने लक्ष्य को पूरा नहीं कर पाते। कारण स्पष्ट है - 'बुद्धि और इंटेलिजेंस'। बुद्धि की जिज्ञासा असीमित है और कहीं-कहीं अनावश्यक भी है, जबकि इंटेलिजेंट अपनी आवश्यकता का जिज्ञासु है। इस आवश्यक और अनावश्यक जिज्ञासा में खर्च होने वाला समय और श्रम हमारी सफलता में विशेष महत्व रखते हैं।

उदाहरण के लिए रामकृष्ण परमहंस जी के जीवन की घटना को समझते हैं। एक बार रामकृष्ण जी से महाज्ञानी व्यक्ति ने कहा, 'क्या आपको पानी पर चलने की विद्या आती है?' रामकृष्ण जी ने बड़ी ही सरलता से ना में जवाब देते हुए कहा, 'मुझे इसकी आवश्यकता ही नहीं है।' पर शान तो अपनी बुद्धिमानी प्रकट करने में थी, सो वह ज्ञानी सज्जन अपनी 20 वर्ष की तपस्या से प्राप्त विद्या का प्रदर्शन करने उन्हें नदी किनारे ले गए और बहुत ही सफलतापूर्वक नदी के दोनों छोर पानी में चलकर नाप लिए और छाती फुलाकर बड़े ही गर्व से अपनी वाहवाही करने लगे और ऐसी वाहवाही की अपेक्षा रामकृष्ण जी से भी करी। पर यह क्या, रामकृष्ण जी सिर्फ मुस्कुरा रहे थे। दूसरे ही क्षण, समीप खड़े नाविक से रामकृष्ण जी ने नदी के पार जाकर आने की बात कही, तो वह नाविक जल्दी उन्हें नदी के दोनों छोड़ भ्रमण करवाकर ले आया। वापस आकर रामकृष्ण जी ने किराया पूछा, तो दो कोड़ी का था, जो उन्होंने उसे दे दिया और ज्ञानी सज्जन को बड़े ही प्यार से बोले, 'भाई, तुमने जीवन के 20 वर्ष सिर्फ दो कौड़ी के लिए खर्च कर दिए।' यहाँ फिर इंटेलिजेंस बुद्धि पर भारी पड़ती है।

इंटेलिजेंस आवश्यकता पर ध्यान केंद्रित करता है, जबकि बुद्धि अनावश्यक की ओर भटकती रहती है। वर्तमान में समझें तो जब हम किसी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर कुछ सीखने की चाह से जाते हैं, तो हमारी बुद्धि हमें अनावश्यक ज्ञान की खोज में भटकाती है। हम ढूंढ रहे होते हैं कुछ और, पहुंच कहीं और जाते हैं और समय और श्रम दोनों हाथ से निकलते जाते हैं। हम फिर मंजिल की राह में दो कदम पीछे आ जाते हैं। वहीं युवा पीढ़ी की बात करें तो डिग्री हो तो कई हासिल कर लेते हैं, पर लक्ष्य निर्धारित नहीं कर पाते। परिणामस्वरूप मायूसी और असफलता हाथ लगती है। दरअसल, जीवन को सफल बनाने के लिए अपनी छोटी-छोटी जरूरतों को जानना आवश्यक है, बजाय उटपटांग बड़ी-बड़ी बातों को मालूम करने के। अपनी समय शक्ति का सही समय पर सही उपयोग करना इंटेलिजेंस है, न कि बात-बात पर बेकार की बातों में अपना बहुमूल्य समय शक्ति बर्बाद कर बुद्धिमानी दिखाना।

देखिए, सफलता के शिखर पर पहुंचे लोग आपको आकर्षित करते हैं और आप भी सफलता के शिखर को छूना चाहते हैं, तो अपने क्षण-क्षण का उपयोग कर जीवन में आवश्यक और अनावश्यक ज्ञान को समझें। अपनी शक्ति और समय का सदुपयोग करें, क्योंकि जरूरत से ज्यादा ऊंचे विचार और आदर्शों की व्यवहारिक जीवन में कोई आवश्यकता नहीं होती। जहां बुद्धि दिखावटी प्रदर्शन करवा कर प्रशंसा चाहती है, वहीं इंटेलिजेंस जीवन में आवश्यक ज्ञान को प्राप्त कर स्वतः प्रसिद्ध स्थापित करता है। बुद्धि भ्रमित कर जीवन में आकुलता और प्रतिस्पर्धा को जन्म देती है, वहीं इंटेलिजेंस लक्ष्य की ओर तटस्थ रहकर शांतिपूर्ण उत्साह पूर्वक रहती है।

अरे, यह क्या... बुद्धि और इंटेलिजेंस की वार्ता से मेरी ध्यानमग्न चेतन जाग उठी और पुनः जीवन के सकारात्मक पहलू से रोमांचित हो गई। अब मुझे मेरी सफलता का रास्ता साफ नजर आने लगा। धन्य है वह घड़ी जब मैं ध्यान मग्न हो गई और मेरे जीवन में सफलता की राह में 'दीप' जल गई।

नववर्ष 2026 - जैन दृष्टि से- (भोग से बोध की ओर: एक चेतना)

डॉ. संतोष जैन
काला (CA)
गुवाहाटी
मो. 9435048488

भूमिका: नया साल नहीं, नई चेतना - हर नया साल हमारे जीवन में एक नई तारीख लेकर आता है पर प्रश्न यह है कि क्या वह एक नई दिशा भी लेकर आता है?

कैलेंडर बदल जाना बहुत आसान है, पर मन का बदलना कठिन है। मोबाइल बदल जाते हैं, कपड़े बदल जाते हैं, शहर बदल जाते हैं - पर सोच, संवेदना और संस्कार प्रायः वही रह जाते हैं। यही कारण है कि आज मनुष्य के पास सुविधाएँ बढ़ी हैं, पर संतोष घटा है; साधन बढ़े हैं, पर शांति घट गई है।

जैन दर्शन हमें सिखाता है कि समय स्वयं कुछ नहीं बदलता - परिवर्तन का कार्य मनुष्य को स्वयं करना होता है। यदि समय बदल जाए और मनुष्य न बदले, तो वह परिवर्तन व्यर्थ है। वास्तव में हर नया दिन, हर नया वर्ष, हर नया क्षण आत्मा को ऊपर उठाने का एक अवसर है। आज नववर्ष मनाने का अर्थ प्रायः शोर, नशा, दिखावा और अपव्यय बन गया है। हम उत्सव को बाहरी बना चुके हैं और भीतर को भूल चुके हैं। परंतु जैन दृष्टि से उत्सव वह नहीं जिसमें शरीर झूमे, बल्कि वह है जिसमें आत्मा प्रसन्न होय वह नहीं जिसमें इन्द्रियाँ तृप्त हों, बल्कि वह है जिसमें विवेक जागृत हो। नववर्ष 2026 को भोग का पर्व नहीं, बोध का पर्व बनाना है। यह हमें याद दिलाना चाहती है कि जीवन का वास्तविक सौंदर्य उपभोग में नहीं, संयम में है; संग्रह में नहीं, संतोष में है; अधिकार में नहीं, उत्तरदायित्व में है।

महावीर स्वामी का संदेश आज भी उतना ही प्रासंगिक है - ''अपने ऊपर विजय पाने वाला, हजारों पर विजय पाने वाले से श्रेष्ठ है।''

यदि हम नववर्ष के अवसर पर केवल अपने क्रोध को थोड़ा कम कर लें, अपनी करुणा को थोड़ा बढ़ा लें, अपने अहंकार को थोड़ा ढीला कर लें - तो यही नववर्ष का सबसे बड़ा उत्सव होगा। नववर्ष 2026 हमें यह अवसर देता है कि हम एक बेहतर मनुष्य बनें, अधिक संवेदनशील, अधिक संयमी और अधिक करुणामय और यही जैन दृष्टि से नववर्ष का सच्चा अर्थ है।

2. आधुनिक उत्सव बनाम आध्यात्मिक उत्सव - आज का उत्सव बाहरी चमक-दमक का पर्व बन गया है। तेज संगीत, नशा, आतिशबाजी, ब्रांडेड कपड़े और सोशल मीडिया प्रदर्शन, यही आज के उत्सव की पहचान बन चुकी है। लोग खर्च को प्रतिष्ठा समझने लगे हैं और प्रतियोगिता इस बात की है कि किसका आयोजन अधिक भव्य, अधिक महँगा और अधिक चर्चित रहा। इस प्रक्रिया में शरीर की तृप्ति तो होती है, पर आत्मा की उपेक्षा होती है। भीतर शांति नहीं आती, बल्कि शोर के बाद और अधिक खालीपन महसूस होता है।

इसके विपरीत जैन उत्सव आत्मा के भीतर दीप जलाने का अवसर होते हैं। यहाँ शांति है, संयम है, सरलता है। यहाँ उत्सव का अर्थ है - आत्ममंथन, क्षमा, प्रायश्चित्त और सेवा। यहाँ हम दूसरों को दिखाने के लिए नहीं, स्वयं को सुधारने के लिए कुछ करते हैं। यही कारण है कि जैन उत्सव व्यक्ति को हल्का बनाते हैं, बोझिल नहीं।

शास्त्र कहते हैं - ''राग ही दुःख है, और राग ही बंधन है।'' जितना अधिक राग, उतना अधिक मोह, उतनी अधिक पीड़ा। इसलिए सच्चा उत्सव वह है जो हमें राग से मुक्त करे, न कि और बाँध दे। आधुनिक उत्सव क्षणिक आनंद देते हैं, जैन उत्सव स्थायी शांति।

3. नववर्ष का प्रथम कार्यः आत्ममंथन - नववर्ष की पहली रात यदि केवल क्लब, पार्टी और शोर में बीत जाए, तो वह केवल कैलेंडर बदलेगा, जीवन नहीं। जैन दृष्टि से नववर्ष का पहला कार्य आत्ममंथन है। आत्ममंथन अर्थात अपने भीतर झाँकना, स्वयं से ईमानदार संवाद करना।

तीन सरल प्रश्न पूरे वर्ष की दिशा तय कर सकते हैं - क्या मैं अधिक संयमी बना?, क्या मेरा क्रोध कम हुआ?, क्या मेरी करुणा बढ़ी? यदि इन तीनों का उत्तर ''हाँ'' की ओर बढ़ रहा है, तो जीवन सही दिशा में है। यदि नहीं, तो हमें अपने मार्ग पर पुनर्विचार करना चाहिए।

शास्त्र कहते हैं - ''अप्पा सयं सुक्कडं दुक्कडं'' - आत्मा स्वयं अपना भाग्य बनाती है। न कोई हमें बिगाड़ता है, न कोई सुधारता है हम स्वयं अपने कर्मों से अपना भविष्य गढ़ते हैं इसलिए नववर्ष का पहला दीप बाहर नहीं, भीतर जलना चाहिए। पहला संकल्प दूसरों को बदलने का नहीं, स्वयं को बदलने का होना चाहिए।

4. क्षमा और प्रायश्चित्त - नववर्ष का सबसे पवित्र कार्य है, क्षमा और प्रायश्चित्त। बिना क्षमा के आत्मा हल्की नहीं होती। पुराने वर्ष के कटु अनुभव, झगड़े, कटु वचन, ईर्ष्या और द्वेष यदि मन में जमा रहें, तो नया वर्ष केवल तारीख का परिवर्तन रह जाता है इसलिए जैन परंपरा सिखाती है -

''खम्मामि सव्वजीवाणं, सव्वेजीवा खमंतु मे'' - मैं सभी जीवों को क्षमा करता हूँ, सभी जीव मुझे क्षमा करें। यह वाक्य केवल शब्द नहीं, आत्मा की सफाई का मंत्र है। क्षमा कमजोरी नहीं, आत्मिक शक्ति है। जो क्षमा कर सकता है वही वास्तव में मुक्त होता है।

प्रायश्चित्त का अर्थ है - गलती स्वीकार करना, पश्चाताप करना और भविष्य में सुधार का संकल्प लेना। यह आत्मा को बोझ से मुक्त करता है। जिस दिन व्यक्ति दूसरों से नहीं, स्वयं से डरना शुरू कर देता है कि ''मैं गलत न कर बैठूँ'', उसी दिन उसकी आध्यात्मिक यात्रा प्रारंभ होती है।

5. जैन नववर्ष संकल्प - जैन नववर्ष के संकल्प भौतिक नहीं, आध्यात्मिक होते हैं। हम यह नहीं कहते कि इस वर्ष कार लूँगा, घर लूँगा, विदेश जाऊँगा बल्कि कहते हैं - मैं कम भोग करूँगा, मैं कम क्रोध करूँगा, मैं कम बोलूँगा, अधिक सुनूँगा, मैं कम खर्च करूँगा, अधिक सेवा करूँगा।

ये संकल्प व्यक्ति को हल्का, सरल और शांत बनाते हैं। भोग घटता है तो बंधन घटते हैं। क्रोध घटता है तो रिश्ते सुधरते हैं। बोलना घटता है तो विवाद घटते हैं। सेवा बढ़ती है तो आनंद बढ़ता है।

शास्त्र कहते हैं - ''संतोष परमं सुखम।'' संतोष ही परम सुख है। जितना अधिक संतोष, उतनी अधिक स्वतंत्रता।

6. परिवार में नववर्ष - नववर्ष केवल कैलेंडर का परिवर्तन नहीं, बल्कि परिवार की चेतना को नया करने का अवसर है। आज परिवारों में उत्सव का अर्थ अक्सर बाहर का शोर, होटल का खाना और सोशल मीडिया पोस्ट बनकर रह गया है, जबकि भीतर संवाद, संस्कार और स्नेह की कमी बढ़ती जा रही है। ऐसे में जैन दृष्टि से नववर्ष का सही अर्थ है - परिवार को भीतर से जोड़ना।

नववर्ष के दिन यदि घर में कुछ समय सामूहिक सामायिक हो, तो परिवार के सभी सदस्य एक ही भावभूमि पर आते हैं। कुछ मिनट का मौन, कुछ मंत्र, और फिर खुले मन से संवाद, इससे रिश्तों में जमी धूल साफ होती है। पति-पत्नी, माता-पिता और बच्चों के बीच यदि क्षमा और स्वीकार का भाव पैदा हो जाए, तो घर मंदिर बन जाता है।

बच्चों को इस दिन अहिंसा, करुणा और संयम की छोटी-छोटी कहानियाँ सुनाई जाएँ। उनसे पूछा जाए - ''तुम इस साल कौन सा अच्छा काम करोगे?'' जब बच्चा स्वयं सेवा या दया का संकल्प करता है, तो वह भीतर से बड़ा होता है।

बच्चे क्या पहनते हैं, यह कम महत्वपूर्ण है - वे क्या सीखते हैं, यह अधिक महत्वपूर्ण है। यदि परिवार नववर्ष को संस्कार का पर्व बना ले, तो समाज स्वतः सुधरने लगता है।

7. युवाओं के लिए संदेश - आज का युवा शक्ति, ऊर्जा और संभावनाओं से भरा हुआ है, पर दिशाहीन होता जा रहा है। आधुनिकता को अक्सर भोग, स्वतंत्रता को स्वेच्छाचार और आनंद को नशा समझ लिया गया है। यही भ्रम युवाओं को भीतर से खोखला बना रहा है।

जैन दृष्टि युवाओं से कहती है - आधुनिक बनो पर आत्मविस्मृत मत बनो। तकनीक अपनाओ, पर मूल्य मत खोओ। अपने शरीर को मजबूत बनाओ, पर आत्मा को कमजोर मत होने दो।

शक्ति को भोग में नहीं, चरित्र में लगाओ। जीवन को उपभोग नहीं, योगदान बनाओ। जब युवा केवल लेने की सोचता है, तो भीतर खाली रहता है। जब वह देने लगता है, तो भीतर भर जाता है।

युवा यदि अपने जीवन में संयम, सेवा और स्वाध्याय को स्थान दे दें, तो वे न केवल सफल बनेंगे बल्कि सार्थक भी बनेंगे। समाज को उपभोक्ता नहीं, चरित्रवान नागरिक चाहिए। और यही चरित्र युवावस्था में बनता है।

8. समाज के लिए नववर्ष - समाज का नववर्ष केवल सार्वजनिक पार्टियों, शोर और दिखावे का पर्व न होकर सामूहिक आत्मचिंतन और नैतिक पुनर्जागरण का अवसर होना चाहिए। जब समाज सामूहिक रूप से अपनी दिशा पर विचार करता है, तभी परिवर्तन संभव होता है।

शराब-मुक्त नववर्ष केवल स्वास्थ्य का विषय नहीं, नैतिकता का विषय है। मांसाहार-मुक्त उत्सव केवल आहार का प्रश्न नहीं, करुणा का प्रश्न है। सेवा-आधारित कार्यक्रम केवल दान नहीं, संवेदना का विस्तार हैं।

समाज यदि नववर्ष को सेवा, स्वच्छता, वृक्षारोपण, निर्धन सहायता, शिक्षा सहयोग जैसे कार्यों से जोड़े, तो उत्सव समाज को जोड़ने वाला बन जाता है, तोड़ने वाला नहीं। नैतिक पुनर्जागरण दिवस का अर्थ है - सामूहिक रूप से यह तय करना कि हम किस तरह का समाज बनाना चाहते हैं - केवल समृद्ध या सभ्य भी?

जब समाज मूल्यों को प्राथमिकता देता है, तब ही पीढ़ियाँ सुरक्षित होती हैं।

9. 2026 की साधना योजना - साधना का अर्थ है - जीवन को दिशा देना। बिना योजना के जीवन बहाव में बह जाता है।

प्रतिदिन 10 मिनट आत्मचिंतन - स्वयं से संवाद है। यह हमें याद दिलाता है कि हम क्या कर रहे हैं और क्यों कर रहे हैं।

सप्ताह में एक सेवा कार्य - समाज से जुड़ाव है। इससे अहंकार घटता है और करुणा बढ़ती है। माह में एक उपवास या संयम अभ्यास - आत्मा की शक्ति है। यह इच्छाओं पर नियंत्रण सिखाता है और भीतर अनुशासन पैदा करता है।

यदि व्यक्ति यह तीन अभ्यास नियमित कर ले, तो उसका जीवन अपने-आप सरल, शांत और संतुलित बन जाता है। यही साधना जीवन को साधारण से सार्थक बनाती है।

10. उपसंहार - शोर नहीं, शुद्धिय भोग नहीं, बोध - नववर्ष 2026 हमारे जीवन में केवल एक नई तारीख जोड़ने न आए - बल्कि हमारे भीतर एक नई चेतना जाग्रत कर जाए। आज नववर्ष को मनाने का अर्थ शोर, नशा, दिखावा और अपव्यय बन गया है। हम दीप जलाते हैं बाहर, पर भीतर अंधेरा रह जाता है। हम उत्सव मनाते हैं शरीर का, पर आत्मा को भूल जाते हैं। यही कारण है कि उत्सव के बाद भी मन खाली रहता है, और आनंद के बाद भी बेचैनी बनी रहती है।

जैन दर्शन हमें याद दिलाता है कि सच्चा उत्सव वह है जिसमें आत्मा हल्की हो, मन शांत हो और विवेक जागृत हो। शोर से शांति नहीं आती और भोग से संतोष नहीं मिलता। शांति आती है संयम से, संतोष आता है संतुलन से और आनंद आता है आत्मिक विकास से। इसलिए नववर्ष 2026 को शोर का पर्व नहीं, शुद्धि का पर्व बनाना ही उसका वास्तविक सम्मान है।

''भोग नहीं, बोध'' - यह केवल नारा नहीं, जीवन-दृष्टि है। भोग बाहर की ओर ले जाता है, बोध भीतर की ओर। भोग हमें वस्तुओं से जोड़ता है, बोध हमें मूल्यों से जोड़ता है। भोग हमें क्षणिक सुख देता है, बोध हमें स्थायी शांति देता है। इसी प्रकार ''प्रदर्शन नहीं, परिवर्तन'' भी केवल शब्द नहीं, दिशा है। प्रदर्शन समाज को प्रभावित करता है, पर परिवर्तन आत्मा को रूपांतरित करता है। और जो आत्मा बदलती है, वही समाज को बदल सकती है।

महावीर स्वामी का यह अमर वाक्य - ''अपने ऊपर विजय पाने वाला, हजारों पर विजय पाने वाले से श्रेष्ठ है''। आज के युग में और भी अधिक प्रासंगिक हो गया है। हम दूसरों को जीतने की होड़ में लगे हैं - प्रतिस्पर्धा में, व्यापार में, राजनीति में, सोशल मीडिया में पर स्वयं को जीतने की साधना भूल गए हैं। क्रोध, लोभ, अहंकार और ईर्ष्या पर विजय पाए बिना संसार की कोई भी विजय हमें सुख नहीं दे सकती। यदि नववर्ष 2026 के अवसर पर हम यह संकल्प लें कि हम अपने भीतर की नकारात्मकताओं को थोड़ा-थोड़ा कम करेंगे, अपनी करुणा को थोड़ा-थोड़ा बढ़ाएँगे, अपने जीवन को थोड़ा-थोड़ा सरल बनाएँगे तो यही नववर्ष का सबसे बड़ा उत्सव होगा। यही सच्चा दीपोत्सव होगा, यही सच्चा अभिनंदन होगा, और यही सच्ची पूजा होगी। नववर्ष 2026 हमें अधिक संवेदनशील मनुष्य बनाए, अधिक संयमी नागरिक बनाए और अधिक करुणामय आत्मा बनाएं और यही इसका उपसंहार है।

शोक समाचार

शेखर चंद पाटनी, राष्ट्रीय संवाददाता

किशनगढ़। नेमीचन्द जी पाटनी का देहावसान 24.12.2025 को अपने निवास स्थान आदिनाथ कॉलोनी किशनगढ़ में हुआ। आप मूलतः छोटा नरेना के थे। आपका विवाह छोटा लाम्बा काला परिवार में हुआ। आपके चार पुत्र और दो पुत्रियां हुये, जो सभी धार्मिक क्षेत्र में जुड़े हुए हैं। आपके पांच पौत्रियां एवं चार पोते हैं, दो पड़पोती हैं। आपका 93 वर्ष की उम्र में स्वर्गवास हो गया बिना किसी विकल्प के।

आपने लम्बे समय से बरपेटा रोड, आसाम में अपना व्यापार किया बाकी समय आप किशनगढ़ में रहे। आप समाज व परिवार में सबको साथ लेकर चलते थे। आपका परिवार आर्यिकारत्न 105 विज्ञाश्री माताजी का अनन्य भक्त है। छोटा नरेना में आपने मन्दिर व धर्मशाला बनवाया। इनके पुत्रों के सहयोग से और विज्ञाश्री माताजी के सान्निध्य में वेदी प्रतिष्ठा हुई, इसमें भी इनकी बहुत भूमिका रही। सिद्धक्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, तीर्थक्षेत्र में भी यात्रा करवाने का योगदान रहा और स्वयं ने भी यात्रा की। आपने निर्ग्रन्थ संतों को आहार देने का चौका लगाने का सौभाग्य प्राप्त किया। रत्नों से भी महंगी मनुष्य पर्याय है उस पर्याय को आपने सार्थक किया है। आपके पुत्र भी आपके पदचिन्हों पर चलते हैं। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़कर गये हैं। जैन गजट को आपके परिवार द्वारा 2100/- राशि प्रदान की गई।

स्थापित श्री वीर निर्वाण सम्वत् 2421 सन् 1894

Estd. 1895

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा

(धर्म, तीर्थ, श्रुत, महिला, युवा)

Khandelwal Digamber Jain Mandir Complex, Raja Bazar, Connaught Circus New Delhi-110001,
Office: +91-11-2334 4668, 2334 4669
Email: digjainmahasabha@gmail.com, Website: www.digjainmahasabha.org

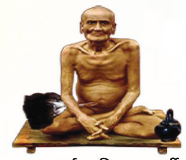

प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्यश्री शांति सागर जी महाराज

जैन पंचांग

जनवरी 2026

दिनांक	चंद्र संचार	जाप	बैंक
1	वृष		
2	मिथुन 09/25		
3	मिथुन		
4	कर्क 09/42		
5	कर्क		
6	सिंह 12/17		
7	सिंह		
8	कन्या 18/39		
9	कन्या		
10	तुला 28/52		
11	तुला		
12	तुला		
13	वृश्चिक 17/20		
14	वृश्चिक		
15	धनु 29/47		
16	धनु		
17	धनु		
18	मकर 16/40		
19	मकर		
20	कुंभ 25/35		
21	कुंभ		
22	कुंभ		
23	मीन 08/38		
24	मीन		
25	मेष 13/35		
26	मेष		
27	वृष 16/44		
28	वृष		
29	मिथुन 18/30		
30	मिथुन		
31	कर्क 20/00		

सर्वार्थ सिद्धि योग

ता. 4-15/11 बजे से ता.5-13/25 बजे तक। ता. 6-07/08 बजे से 12/17 बजे तक। ता.14-07/09 बजे से 27/03 बजे तक। ता. 18-10/14 बजे से 31/09 बजे तक। ता. 19-11/52 बजे से 31/09 बजे तक। ता. 25-13/35 बजे से 31/08 बजे तक। ता. 27-11/08 बजे से ता. 28-31/07 बजे तक।

सूर्योदय सूर्यास्त

ता.	सूर्योदय	सूर्यास्त
1	07.07	17.53
6	07.08	17.57
11	07.09	18.00
16	07.09	18.04
21	07.09	18.07
26	07.08	18.11
31	07.06	18.14

1 जनवरी सूर्योदय का लग्न चक्र

पंचक

ता. 20-25/35 बजे से ता. 25-13/35 बजे तक।

(चंद्र चिह्न) सूर्योदय के समय बांया स्वर रहेगा।

(सूर्य चिह्न) सूर्योदय के समय दांया स्वर रहेगा।

रवि	प.पू. आचार्यश्री विद्यासागरजी	माघ कृष्ण 1 12/29 ध्वज **4** पुनर्वसु 15/11 रवि–पुष्य योग त्रिपुष्कर योग सर्वार्थसिद्धि योग	माघ कृष्ण 8 10/20 छत्र **11** चित्रा 18/12 सूर्य उ.षा. में	माघ कृष्ण 30 25/21 वृद्धि **18** पू.षा. 10/14 सर्वार्थसिद्धि योग अमावस	माघ शुक्ल 7 23/10 वर्धमान **25** रेवती 13/35 सर्वार्थसिद्धि योग पंचक
सोम	प.पू. आ. विज्ञानमतिजी	माघ कृष्ण 2-3 09/56–32/01 प्रजापति **5** पुष्य 13/25 सर्वार्थसिद्धि योग	माघ कृष्ण 9 12/42 छत्र **12** स्वाती 21/05 राष्ट्रीय युवा दिवस	माघ शुक्ल 1 26/14 काण **19** उ.षा. 11/52 सर्वार्थसिद्धि योग	माघ शुक्ल 8 21/17 राक्षस **26** अश्विनी 12/32 गणतंत्र दिवस
मंगल	प.पू. आ. गुरुमतिजी	माघ कृष्ण 4 30/52 आनन्द **6** आश्लेषा 12/17 सर्वार्थसिद्धि योग	माघ कृष्ण 10 15/17 श्रीवत्स **13** विशाखा 24/06	माघ शुक्ल 2 26/42 धूम्र **20** श्रवण 13/06 पंचक द्विपुष्कर योग	माघ शुक्ल 9 19/05 मुसल **27** भरणी 11/08 रवि योग सर्वार्थसिद्धि योग
बुध	प.पू. आ. दृढमतिजी	माघ कृष्ण 5 30/33 चर **7** मघा 11/56	माघ कृष्ण 11 17/52 सौम्य **14** अनुराधा 27/03 मकर संक्रांति देवदर्शन दिवस सर्वार्थसिद्धि योग सूर्य मकर में	माघ शुक्ल 3 26/47 मित्र **21** धनिष्ठा 13/58 पंचक रवि योग	माघ शुक्ल 10 16/35 सिद्धि **28** कृत्तिका 09/26 रवि योग सर्वार्थसिद्धि योग
गुरु	पौष शुक्ल 13 22/22 उत्पात **1** रोहिणी 22/48 नववर्ष प्रारंभ रवि योग	माघ कृष्ण 6 31/05 गद **8** पू.फा. 12/24 रवि योग	माघ कृष्ण 12 20/16 कालदण्ड **15** ज्येष्ठा 29/47	माघ शुक्ल 4 26/28 छत्र **22** शतभिषा 14/27 पंचक रवि योग	माघ शुक्ल 11 13/55 उत्पात **29** रोहिणी–मृग 07/31–29/29 रवि योग
शुक्र	पौष शुक्ल 14 18/53 मानस **2** मृगशिरा 20/04 रवि योग षोडशकारण व्रत प्रा.	माघ कृष्ण 7 दिन–रात वृद्धि **9** उ.फा. 13/40 रवि योग	माघ कृष्ण 13 22/21 स्थिर **16** मूल दिन–रात	माघ शुक्ल 5 25/46 ध्वांक्ष **23** पू.भा. 14/33 पंचक, रवि योग बसंत पंचमी ने. सुभाषचंद्र ज.	माघ शुक्ल 12–13 11/09–32/25 छत्र **30** आर्द्रा 27/27 रवि योग गाँधी निर्वाण दि.
शनि	पौष शुक्ल 15 15/32 मुद्गर **3** आर्द्रा 17/27 पूर्णिमा	माघ कृष्ण 7 08/23 स्थिर **10** हस्त 15/40	माघ कृष्ण 14 24/03 गद **17** मूल 08/12 मोक्ष दिवस	माघ शुक्ल 6 24/39 ध्वांक्ष **24** उ.भा. 14/16 पंचक, रवि योग सूर्य श्रवण में	माघ शुक्ल 14 29/52 छत्र **31** पुनर्वसु 25/34 रवि योग शुक्र उदय

तीर्थंकर दर्पण

2	भ. अभिनंदनजी	–ज्ञान
3	भ. धर्मनाथजी	–ज्ञान
8	भ. पद्मप्रभजी	–गर्भ
15	भ. शीतलनाथजी	–जन्म–तप
17	भ. आदिनाथजी	–मोक्ष
18	भ. श्रेयांसनाथजी	–ज्ञान
20	भ. वासुपूज्यजी	–ज्ञान
22	भ. विमलनाथजी	–जन्म–तप
24	भ. विमलनाथजी	–ज्ञान
27	भ. अजितनाथजी	–तप
28	भ. अजितनाथजी	–जन्म
30	भ. अभिनंदनजी	–जन्म–तप
30	भ. धर्मनाथजी	–जन्म–तप

आचार्य दर्पण

1	मुनि श्री धीरसागरजी	–समाधि
4	आचार्यश्री बाहुबलीसागरजी	–मुनि दीक्षा
5	आचार्यश्री सन्मतिसागरजी	–आचार्य पद
6	ग.आ. विजयमतिजी	–गणिनी पद
8	आचार्यश्री महावीरकीर्तिजी	–समाधि
8	आर्यिका श्री संगतमतिजी	–समाधि
17	आचार्यश्री अभिनंदनसागरजी	–समाधि
17	आचार्यश्री पुष्पदन्तसागरजी	–मुनि दीक्षा
21	मुनिश्री सुप्रभसागरजी	–मुनि दीक्षा
21	आर्यिकाश्री सिद्धांतमतिजी	–आर्यिका दीक्षा
23	मुनिश्री मल्लिसागरजी (आचार्य 25)	–मुनि दीक्षा
25	आचार्यकल्प श्री ज्ञानभूषणजी	–मुनि दीक्षा
27	आचार्यश्री विद्यासागरजी	–समाधि
28	आचार्यश्री भरतसागरजी	–मुनि दीक्षा
28	आचार्यश्री निर्भयसागरजी	–मुनि दीक्षा
30	आर्यिका श्री विज्ञानमतिजी	–आर्यिका दीक्षा
30	आर्यिकाश्री गुरुमतिजी	–आर्यिका दीक्षा
30	आचार्यश्री दृढमतिजी	–आर्यिका दीक्षा

माह के प्रमुख व्रत

1	रोहिणी व्रत
2	षोडशकारण व्रत प्रारंभ
14	देवदर्शन दिवस
17	मोक्ष दिवस
19	लब्धि विधान व्रत प्रारंभ
21	लब्धि विधान व्रत पूर्ण
22	दशलक्षण व्रत प्रारंभ
23	पुष्पांजली व्रत प्रारंभ
27	पुष्पांजली व्रत पूर्ण
29	रोहिणी व्रत
30	रत्नत्रय व्रत प्रारंभ
31	दशलक्षण व्रत पूर्ण

माह के शुभ मुहूर्त

पुराने/किराये के घर में प्रवेश– 1,5,10,12,14,21,23,26,28
घर नवीनीकरण– 1,4,5,8,10,11,12,23,24,25, 26, 28,29
नवीन वस्त्राभूषण धारण– 1,8,9,14,21,28,29
विद्यारम्भ– 16,21,23
वाहन खरीदी– 1,2,4,5,11,12,14,21,28,29
घर जमीन खरीदना– 2,8,16,22,23,29
मशीनरी प्रारंभ– 1,3,4,7,8,10,11,12,14,15,16, 19,21,23,24,25,26, 28,29
दुकान या कार्यालय प्रारंभ– 5,7,23,28
शिशु को प्रथम देवदर्शन–1,4,5,12,14,19,21,23,25, 28,29
नामकरण–1,5,12,14,21, 23,28
मुण्डन– 4,5,10,11,12,14,21,25,26,31
शैक्षणिक संस्था में प्रवेश– 4,7,8,14,16,21,23,25,29,30
शल्य चिकित्सा– 1,3,4,5,9,10,12,16,19,21,23, 25,28,31
औषधी सेवन– 3,4,5, 10,12,14,16,19,21,25,31

समाज की। समाज द्वारा। समाज के लिए

djainmahasabha | djainmahasabha | djainmahasabha | djainmahasabha | digjainmahasabha.org

चौदहवीं पुण्य तिथि : श्रद्धांजलि

जन्म
दि. 19 नवम्बर, 1959
भागलपुर (बिहार)

स्वर्गवास
दि. 7 जनवरी, 2012
कोलकाता

स्व. श्रीमती सोना देवी सेठी

हमारी प्रेरणास्रोत, जिनका संयमित, सत्यनिष्ठ, समन्वयवादी, देव-शास्त्र-गुरु के प्रति समर्पित जीवन सदैव एक दीप स्तम्भ की तरह हम सभी के जीवन को आलोकित करता रहेगा।

आपके सरल स्वभावी एवं धार्मिक व्यक्तित्व को सदैव ही समाज में सुख एवं परोपकार के लिए याद किया जाएगा।

चौदहवीं पुण्यतिथि पर आपको श्रद्धा के साथ स्मरण करते हैं।

-: श्रद्धावनत :-

बिनोद कुमार सेठी (पति)

दिवस-श्रीमती रश्मि सेठी, आनन्द-श्रीमती नीनू सेठी (पुत्र-पुत्रवधु)
श्रीमती चाँदनी-श्री अभिषेक जी पाटौदी, श्रीमती शिवांगी-श्री सौरभ जी मोदी (पुत्री-दामाद)
दक्ष, अमायरा, अर्हम (पौत्र), शारनया (दोहती)

एवं समस्त परिवार

SMT. SONA DEVI SETHI CHARITABLE TRUST
Phulchand Binod Kumar Sethi
Old Daily Market, Dimapur (Nagaland)
Ph- 03862-225829-32, Email- sdsethitrust@gmail.com

समस्या समाधान - रवि जैन गुरूजी

प्रश्न 1. गुरूजी, मेरा बेटा 8 साल का है, मगर वह बोलता नहीं है। सुनने में उसे कोई परेशानी नहीं है। क्या भविष्य में वह बोल पायेगा - अमित, कोटद्वार

उत्तर - अमित जी, बेटे को एक बादाम की गिरि पत्थर पर घिस कर चटायें तथा पन्ना रत्न का लॉकेट बुधवार के दिन धारण करायें, अवश्य लाभ होगा।

प्रश्न 2. गुरूजी, मेरी शादी दो वर्ष पूर्व हुई थी। शादी के दौरान से ही पत्नी डिप्रेशन में थी। एक वर्ष पूर्व उसने आत्म हत्या कर ली। ससुराल पक्ष ने दहेज का आरोप लगातार केस दर्ज करा दिया - रामेश्वर, दिल्ली

उत्तर - आपकी कुंडली सूर्य नीच का तथा शनि उच्च का विराजमान होकर लग्न में बैठें है। माणिक्य 6 से 7 रत्ती का तथा मून स्टोन का लॉकेट धारण करें, साथ ही शनिवार को काले उड़द दान करें।

प्रश्न 3. मेरा एक लड़की के साथ अफेयर चल रहा है, पांच माह पश्चात् शादी भी है। मगर हम दोनों के बीच मनमुटाव ज्यादा रहता है। मुझे क्या करना चाहिये - प्रयाग जैन, पटेल नगर, दिल्ली

उत्तर - दोनों की कुंडली में राहु की अन्तदशा के कारण ऐसा हो रहा है। श्री नेमिनाथ चालीसा पढ़ें रोजाना।

प्रश्न 4. क्रोध आने का क्या कारण है - मोहित राणा, लोनी

उत्तर - कुंडली में मंगल नीच का विराजमान है। जिस कारण क्रोध ज्यादा आता ही है। श्री वासुपूज्य जी का चालीसा पढ़ें लाभ होगा।

गुरु जी से संपर्क सूत्र-
9990402062, 826755078

उपाध्याय उर्जयन्त सागरजी तथा आर्यिका सरस्वती माताजी के कर कमलों द्वारा

तिथि दर्पण का हुआ विमोचन

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

जयपुर, 30 दिसम्बर। श्री चन्द्रप्रभ चेरीटेबल संस्था दुर्गापुरा अपने स्थापना काल से ही समाजोपयोगी तिथि दर्पण का प्रकाशन (जनवरी से दिसम्बर) निरन्तर करता आ रहा है। कार्यक्रम में संस्था के पदाधिकारी श्री महावीर चांदवाड ने बताया कि खूंटी का प्रचलन समाप्त हो जाने के कारण संस्था प्रारम्भ से ही टेबिल कलेण्डर के रुप में उक्त प्रकाशन प्रकाशित करती आ रही है, तिथि दर्पण में देशी माह, तिथियाँ, जैन पर्व, स्थानीय त्योंहार, पंच कल्याणक, सरकारी छुट्टियां, बैंक अवकाशों आदि के विवरण के साथ प्रकाशित किया जाता है। इसी विशेषता के कारण तिथि दर्पण की मांग वर्ष समाप्ति के पूर्व ही होने लग जाती है। इस विशेषता के कारण ही विदेश व भारत के विभिन्न राज्यों में रह रहे परिवारों द्वारा यह तिथि दर्पण कैलेण्डर मंगाया जाता है, जिसका उपयोग कार्पोरेट कम्पनी में काम कर रहे युवक - युवतियों द्वारा भी किया जाता है, वर्ष 2026 के लिए प्रकाशित तिथि दर्पण पूर्व वर्षों से हटकर नये कलेवर के साथ प्रकाशित कराया गया है जो आपको देखने में अति सुन्दर लगेगा।

संस्था के संयुक्त मंत्री आनन्द अजमेरा व सदस्य भागचन्द बाकलीवाल मित्रपुरा वाले ने बताया कि संस्था निःशुल्क धर्मार्थ चिकित्सालय के माध्यम से आयुर्वेद, ऐलोपैथी, होमियोपैथी योग व प्राकृतिक चिकित्सा की सुविधा बिना भेदभाव के उपलब्ध कराती है। विभिन्न सुविधाओं से युक्त नव प्रकाशित तिथि दर्पण का विमोचन परम उपकारी सन्त द्वय श्री दिगम्बर जैन मन्दिर जी दुर्गापुरा में प्रवासरत शिरोमणि गणिनी आर्यिका श्री 105 सरस्वती माता जी ससंघ व प्रताप नगर सेक्टर-8 में विराजित वात्सल्य मूर्ति रत्नाकर आचार्य रत्न श्री 108 विमल सागर जी महाराज के अन्तिम दीक्षित उपाध्याय श्री 108 उर्जयन्त सागर महाराज के कर कमलों से पावन विमोचन हुआ। उपाध्याय श्री ने अपनी सुन्दर लेखनी से संस्था के लिए आशीर्वचन भी लिखें हैं, जिसके लिए संस्था दोनों ही उपकारी संतों की आभारी है। विमोचन के कार्यक्रम के समय संस्था के मानद् मंत्री श्री महावीर कुमार चान्दवाड, संयुक्त मंत्री श्री यशकमल अजमेरा, श्री आनन्द अजमेरा, सदस्य गण श्री भागचन्द बाकलीवाल मित्रपुरा, श्री जयकुमार बिन्दायका बगरु वाले, श्री भागचन्द साह, सदस्य व मन्दिर ट्रस्ट के सम्मानीय अध्यक्ष श्री प्रकाश चन्द चान्दवाड, मंत्री श्री राजेन्द्र काला, विद्वान श्री अजित शास्त्री, प्रताप नगर के श्रेष्ठी गण उपस्थित थे।

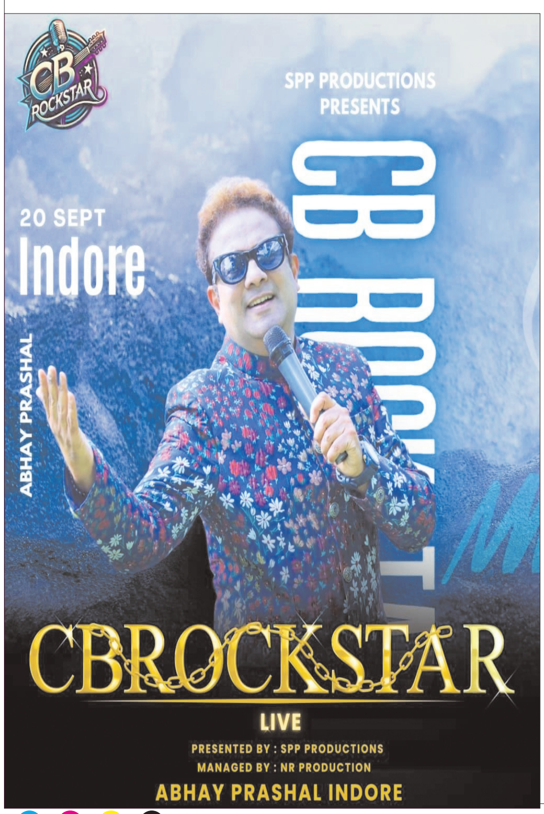

शाकाहारी भोजन की अपनी शुद्ध पहचान होनी चाहिए

आजकल शाकाहारी व्यंजनों के नाम भी अपदूषित हो गए हैं -

वेज बिरयानी, हरा-भरा कबाब, पनीर मुसल्लम, दही कबाब, वेज कोरमा, मैंगो जोश। सोचिए - बिरयानी, कबाब, कोरमा जैसे शब्द मूलतः मांसाहारी व्यंजनों से जुड़े हैं फिर शाकाहारी भोजन को ऐसे नाम क्यों?

एक सच्ची घटना - एक जैन विवाह में भोजन के स्टॉल पर ऐसे ही नाम लिखे थे। 65 वर्ष के एक संस्कारी बुजुर्ग ने स्पष्ट कह दिया - ''हम विवाह में आए हैं, निकाह में नहीं या तो मेन्यू बदलिए, या भोजन हटाइए।'' उनका प्रश्न सीधा था - बिरयानी और कबाब का अर्थ क्या है, पहले यह समझाइए! किसी के पास उत्तर नहीं था। अंततः कैटरर्स को स्टॉल से ऐसे शब्द हटाने पड़े तभी सभी ने भोजन किया। तथ्य जानिए - बिरयानी - मांस व सब्जियों का मिश्रण, कबाब (फारसी शब्द) - पका हुआ मांस, कोरमा - भुना हुआ मांस, अब स्वयं सोचिए - क्या शाकाहारी भोजन के साथ ऐसे नाम उचित हैं? आह्वान - कैटरर्स को ऐसे नाम देने से रोकिए, होटल/रेस्टोरेंट में विरोध प्रकट कीजिए, मेन्यू तय करते समय अपनी संस्कृति व संस्कार देखें। आपकी छोटी सी जागरूकता, समाज को एक बड़ी अपसंस्कृति से बचा सकती है।

शाकाहार की पहचान बचाइए - भोजन नामकरण व्यंजन शब्दावली में भी संस्कार अपनाइए।

स्वत्वाधिकारी 'श्री भारतवर्षीय दिगबर जैन महासभा' के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक सुभाषचन्द्र गुप्ता द्वारा द इण्डियन एसप्रेस प्रा. लि. सी 26, अमौसी इण्डस्ट्रीयल एरिया लखनऊ उर प्रदेश से मुद्रित एवं श्री नंदीश्वर लोर मिल्स कपाउण्ड, मिल रोड, ऐशबाग लखनऊ-226004 उ. प्र. से प्रकाशित, सपादक -सुधेश कुमार जैन

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा

अध्यक्ष
गजराज जैन गंगवाल
मो. 09810900009

कार्याध्यक्ष
रमेश जैन तिजारिया
मोबाइल - 08290950000
प्रकाशचन्द्र जैन बड़जात्या
मोबाइल- 9840213132
राजेश बी. शाह
मोबाइल- 9076700000

महामंत्री
पवन जैन गोधा
मो. 9311198985

कोषाध्यक्ष
प्रकाश बोहरा
दिल्ली

प्रधान सम्पादक
कपूरचन्द जैन (पाटनी)
मो. 09864118950, 0 9854050969
Email- k.c.jain39@gmail.com

सम्पादक
सुधेश कुमार जैन, लखनऊ
मो. 09415108233
नन्दीश्वर फ्लोर मिल्स कम्पाउण्ड, ऐशबाग, लखनऊ- 226004 (उ0प्र0)
jaingazette2@gmail.com
dmahasabha@yahoo.com

सह सम्पादक (मानद)
राजेन्द्र जैन 'महावीर' सनावद
मो. 9407492577
डॉ. सुनील 'संचय' ललितपुर
मो. 9793821108

लखनऊ प्रधान कार्यालय प्रबंधक प्रकाशक एवं मुद्रक
सुभाषचन्द्र गुप्ता
मोबा. 09415008344

दिल्ली मुख्य कार्यालय प्रबंधक
स्वराज जैन
मोबा. 09899614433
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा, 5, राजा बाजार, खण्डेलवाल जैन मंदिर कॉम्प्लेक्स, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली -1
011-23344668, 23344669,
digjainmahasabha@gmail.com
www.digjainmahasabha.org

जैन गजट की सदस्यता
वार्षिक (एक वर्ष) रू. 300
आजीवन (दस वर्ष) रू. 2100
निर्धारित रियायती साधारण डाक से
कोरियर से मंगाने पर
अतिरिक्त शुल्क- दिल्ली, उ.प्र.
रू. 1000 अन्य प्रदेश रू. 1500

'जैन गजट' में विज्ञापन देने हेतु सम्पर्क-
7607921391, 7505102419
जैन गजट में प्रकाशनार्थ लेख, फोटो, समाचार, विज्ञापन आप ईमेल
jaingazette2@gmail.com
पर भेजें

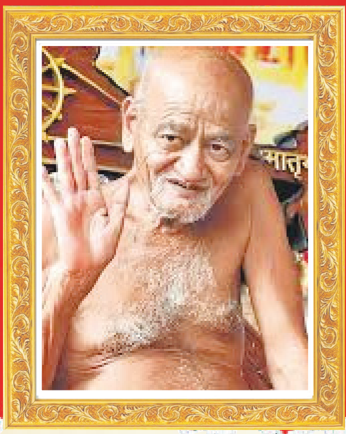

आचार्य 108 श्री विद्यासागर जी महाराज के द्वितीय समाधि स्मृति दिवस पर उनके प्रवचनों का सार

जब तीर्थंकर भगवान् का जन्म होता है, तब धूल-धूसरित रास्ता उज्ज्वल बनता जाता है और उनके अभाव में वापस धूल से भर जाता है। प्राय: संसारी व्यक्ति को रास्ता बताने की जरूरत पड़ती है। जिस प्रकार आकाश में अनेकों पक्षी चलते हैं पर उनके पद-चिह्न नहीं पड़ते हैं, उसी प्रकार मोक्ष रास्ते में अनेकों व्यक्ति चलते हैं, पर चिह्न नहीं पड़ते हैं। नमस्कार हमको किस लक्ष्य को लेकर करना है ? यह हमें देखना है। अनेक व्यक्ति रात दिन भगवान् का नाम लेते हैं, उपासना करते हैं। तन, मन, धन व वचन से नाम लेते हैं पर इससे ऊपर भी एक चीज है, वह है लक्ष्य की ओर ध्यान देना, निदान की ओर ध्यान देना। जब तक रोग का निदान नहीं होगा, तब तक रोगी का रोग दूर नहीं होगा, उसी प्रकार हमें भी लक्ष्य को पहले देखना होगा। हमें यह देखना होगा कि जिस वस्तु (लक्ष्य) को हम चाह रहे हैं, उसको प्राप्त करने का रास्ता भिन्न तो नहीं है, हमारी गति दूसरी दिशा की ओर तो नहीं है।

प्रेरणा

अशोक पाटनी
आर.के. मार्बल्स किशनगढ़

सुधान्शु कासलीवाल
जयपुर

जहां उपस्थित होते है वहां सब आपको प्यार करते हैं,
जहां से चले जाते है, सब आपको याद करते हैं।
जहां पहुंचने वाले होते हैं वहां सब आपका इन्तजार करते हैं।

पुण्यार्जक/नमनकर्ता

तरूण काला
मुम्बई

पवन पाटनी
(आशिका ग्रुप, मुम्बई)

राजेन्द्र प्रसाद जैन श्रीमती ममता जैन
(प्रशांत जैन के माता-पिता) मुम्बई

पंकज जैन
मुम्बई

जयकुमार बड़जात्या
गोलाघाट

विज्ञापन प्रेषक: R. K. Advertising मदनगंज किशनगढ़, द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatni777@gmail.com

हेड ऑफिस-मदनगंज किशनगढ़, ब्रांच आफिस- जयपुर, इंदौर, सूरत, मुम्बई, कोलकाता, गुवाहाटी

पंजीकृत समाचार पत्र
R.N.I. NO. 59665/92

Posted at R. M. S, Char bagh, Lko. on
Every Monday, wednesday and thursday

डाक पंजीयन संख्या :
SSP/LW/NP/115/2024-2026

If Undelivered Please Return To : Publisher- Jain Gazette
C/o Sri Nandishwar Flour Mills Compound, Mill Road, Aish bagh,
Lucknow - 226004 (U. P.) (INDIA) Mob. 9415108233,
7505102419, 7607921391 Web site- jaingaztte.com
email- jaingazette2@gmail.com whatsapp 7607921391

To,

एक प्रति का मूल्य 3/- रुपये (कार्यालय से लेने पर)

वार्षिक सदस्यता शुल्क 300/-,
दस वर्षीय आजीवन शुल्क 2100/-
(डाक/कोरियर से मंगाने पर खर्च अतिरिक्त देय होगा)

जैन गजट संबंधी सभी विवादों के लिए न्याय क्षेत्र लखनऊ ही मान्य होगा। लेखक के विचारों से संस्था या सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।